Drishti IAS Presents...

PT SPRINT 2024

इतिहास

(मार्च 2023 – मार्च 2024)

Drishti IAS, 641, Mukherjee Nagar, Opp. Signature View Apartment, New Delhi

Drishti IAS, 21 Pusa Road, Karol Bagh New Delhi - 05

Drishti IAS, Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj, Uttar Pradesh

Drishti IAS, Tonk Road, Vasundhra Colony, Jaipur, Rajasthan

e-mail: englishsupport@groupdrishti.com, **Website:** www.drishtiias.com

Contact: 011430665089, 7669806814, 8010440440

अनुक्रम

- सावित्रीबाई फुले 3
- लाला लाजपत राय 4
- शहीद दिवस 5
- असम के चराइदेव मोईदाम 5
- पराक्रम दिवस 2023 7
- पाणिनि की अष्टाध्यायी और व्याकरण की सबसे बड़ी पहेली 9
- सरोजिनी नायडू- द नाइटिंगेल ऑफ इंडिया 9
- ASI ने खोजा 1300 वर्ष पुराना बौद्ध स्तूप 11
- डिकिन्सोनिया जीवाश्म 13
- कीलादी निष्कर्ष 14
- युद्ध स्मारक 1857 के विद्रोह की कहानी बताता है 14
- वैकोम सत्याग्रह 16
- डॉ. भीमराव अंबेडकर का जीवन और विरासत 16
- भारत में प्रमुख जनजातीय विद्रोह 17
- राम प्रसाद बिस्मिल 18
- गांधीजी के सत्याग्रह का 130वाँ वर्ष 18
- पुराना किला का उत्खनन 19
- रानी दुर्गावती 20
- प्राचीन माया शहर की खोज 21
- आंध्र प्रदेश में मध्यपाषाणकालीन शैलचित्रों की खोज 22
- अल्लूरी सीताराम राजू 24
- लाल किला: भारत का स्वतंत्रता दिवस समारोह स्थल 25
- भारत का समुद्री इतिहास 26
- भारत में समुद्री परिवहन की वर्तमान स्थिति 27
- छत्रपति शिवाजी महाराज का वाघ नख 28
- महात्मा गांधी की 154वीं जयंती 30
- पुर्तगाली सिक्का 31
- डॉ. राजेंद्र प्रसाद 32
- हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन और काकोरी ट्रेन एक्शन 32
- गणतंत्र दिवस 2024 33
- पराक्रम दिवस 2024 35
- रानी चेन्नम्मा 37
- रानी चेन्नम्मा कौन थी? 37
- साबरमती आश्रम पुनर्विकास परियोजना 38
- दांडी मार्च क्या है? 38

सावित्रीबाई फुले

सावित्रीबाई फुले

(03 जनवरी, 1831 - 10 मार्च, 1897)

19वीं सदी की एक प्रमुख समाज सुधारक जिन्होंने महिला शिक्षा के क्षेत्र में काम किया

आरंभिक जीवन

- जन्म माली समुदाय में (महाराष्ट्र)
- 9 वर्ष की आयु में 13 वर्षीय ज्योतिराव फुले के साथ विवाह- भारत के सामाजिक और शैक्षिक इतिहास में एक असाधारण युगल

सामाजिक योगदान

- व्यक्तिगत
  - काव्य फुले (1854) और बावन काशी सुबोध रत्नाकर (1892) का प्रकाशन
  - वर्ष 1852 में महिलाओं के अधिकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिये 'महिला सेवा मंडल' की शुरुआत
  - वंचित समुदायों के लिये 'गो, गेट एजुकेशन' कविता की रचना
  - ज्योतिबा की मृत्यु (1890) के बाद सत्यशोधक समाज को आगे बढ़ाया

ज्योतिबा के साथ

- 1848 में पूना में लड़कियों, शूद्रों और अति-शूद्रों के लिये एक स्कूल शुरू किया (महिलाओं के लिये भारत का पहला स्कूल जिसे भारतीयों द्वारा शुरू किया गया)
- 1850 के दशक में नेटिव फीमेल स्कूल (पुणे) और सोसायटी फॉर प्रमोटिंग दि एजुकेशन ऑफ महार्स एंड मॉंग्स की शुरुआत
- अपने ही घर में बालहत्या प्रतिबंधक गृह की शुरुआत

दृष्टि The Vision Drishti IAS

लाला लाजपत राय

लाला लाजपत राय

28 जनवरी 1865 -17 नवंबर 1928

संक्षिप्त परिचय

- पंजाब केशरी के नाम से भी जाना जाता है
- स्वामी दयानंद सरस्वती से प्रभावित होकर लाहौर में आर्य समाज में शामिल हुए
- बिपिन चंद्र पाल और बाल गंगाधर तिलक के साथ चरमपंथी नेताओं के त्राय (लाल-बाल-पाल) के रूप में प्रसिद्ध
- हिंदू महासभा से जुड़े

राजनीतिक योगदान

- 1907 - बर्मा भेज दिया गया, लेकिन पर्याप्त सबूतों के अभाव में कुछ महीनों बाद वे वापस लौट आए
- 1917 - अमेरिका में होम रूल लीग ऑफ अमेरिका (न्यूयार्क) की स्थापना की
- 1920 - कलकत्ता में भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस के विशेष अधिवेशन की अध्यक्षता जहाँ गांधी ने असहयोग आंदोलन का संकल्प प्रस्तुत किया
- 1920 - अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कॉन्ग्रेस के अध्यक्ष (प्रथम) चुने गए
- 1926 - केंद्रीय विधनमंडल के उपनेता चुने गए
- 1928 - साइमन कमीशन के खिलाफ विधानमंडल में प्रस्ताव पेश किया

सामाजिक योगदान

- 1886 - डीएवी आंदोलन की स्थापना
- 1897 - अकाल पीड़ित लोगों की मदद करने और उन्हें मिशनरियों के चंगुल से बचाने के लिये हिंदू राहत आंदोलन (Hindu Relief Movement)) की शुरुआत
- 1921 - सर्वेंट्स ऑफ पीपल सोसाइटी की स्थापना (मातृभूमि की सेवा के हेतु राष्ट्रीय मिशनरियों को सूचीबद्ध करने, प्रशिक्षित करने के लिए)

नोट: सर्वेंट्स ऑफ पीपल सोसाइटी वर्ष 1905 में गोपाल कृष्ण गोखले द्वारा स्थापित सर्वेंट्स ऑफ इंडिया से अलग है

अन्य योगदान

- संस्थान-
  - 1894 - पंजाब नेशनल बैंक की सह-स्थापना
- महत्त्वपूर्ण साहित्यिक रचनाएँ -
  - 1908 - द स्टोरी ऑफ माय डिपोर्टेशन
  - 1915 - आर्य समाज
  - 1916 - यंग इंडिया, द यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका: ए हिंदू इम्प्रेशन
  - 1917 - इंग्लैंड्स डेब्ट टू इंडिया: ए हिस्टोरिकल नैरेटिव ऑफप ब्रिटेन्स फिस्कल पॉलिसी इन इन इंडिया
  - 1928 - अनहैप्पी इंडिया

मृत्यु

- 1928 - लाहौर में साइमन कमीशन के खिलाफ एक मौन विरोध का नेतृत्त्व करते समय जेम्स स्कॉट द्वारा किये गए लाठीचार्ज में लगी चोटों के कारण

Drishti IAS

शहीद दिवस

30 जनवरी, 2023 को भारत उन सभी स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये शहीद दिवस के रूप में मनाता है, जिन्होंने देश के लिये बलिदान दिया। इस दिन को देश के 'बापू', महात्मा गांधी की पुण्यतिथि के रूप में भी चिह्नित किया गया है।

- भारत में शहीद दिवस या सर्वोदय दिवस वर्ष में कई बार मनाया जाता है।

शहीद दिवस:

- **स्मृति में:**
  - महात्मा गांधी जिनका जन्म 2 अक्तूबर, 1869 को हुआ था, भारत के सबसे प्रभावशाली नेताओं में से एक थे तथा उन्होंने देश की स्वतंत्रता में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
  - इसी दिन वर्ष 1948 में नाथूराम गोडसे ने नई दिल्ली के बिड़ला हाउस में महात्मा गांधी की हत्या कर दी थी।
- **जश्न मनाने का माध्यम:**
  - भारत ने दिल्ली में राजघाट पर महात्मा गांधी की समाधि पर श्रद्धांजलि अर्पित कर शहीद दिवस मनाया।
    - राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, रक्षा मंत्री और तीनों सेना प्रमुख (सेना, वायु सेना और नौसेना) 'राष्ट्रपिता' को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।
- **महत्त्व:**
  - शहीद दिवस का महत्त्व इस तथ्य में निहित है कि महात्मा गांधी ने अहिंसक दृष्टिकोण के माध्यम से ब्रिटिश शासन के खिलाफ प्रमुख आंदोलनों का नेतृत्त्व किया।
    - उनका दर्शन अहिंसा, सत्य के लिये लड़ाई (सत्याग्रह), राजनीतिक और व्यक्तिगत स्वतंत्रता (स्वराज) के सिद्धांतों पर आधारित था तथा उनके सिद्धांतों ने लाखों लोगों को प्रेरित किया।

भारत में अन्य शहीद दिवस:

दिवस	परिचय
23 मार्च	➲ इस दिन भगत सिंह, शिवराम राजगुरु और सुखदेव थापर को लाहौर जेल में अंग्रेज़ों ने फाँसी पर लटका दिया था।
19 मई	➲ यह असम में 19 मई, 1961 को राज्य पुलिस द्वारा मारे गए लोगों की याद में मनाया जाता है। ➲ इस दिन को भाषा शहीद दिवस के रूप में नामित किया गया था।
13 जुलाई	➲ जम्मू-कश्मीर के महाराजा हरि सिंह के शासन के खिलाफ प्रदर्शन करते समय मारे गए लोगों को याद करने के लिये कश्मीर 13 जुलाई को शहीद दिवस के रूप में मनाता है।
17 नवंबर	➲ ओडिशा इस दिन को प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी लाला लाजपत राय को उनकी पुण्यतिथि पर याद करने के लिये मनाता है।
19 नवंबर	➲ रानी लक्ष्मीबाई की जयंती को झांसी के लोग शहीद दिवस के रूप में मनाते हैं। ➲ यह दिन 1857 के विद्रोह में मारे गए सभी लोगों के योगदान के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।
24 नवंबर	➲ सिख समुदाय द्वारा इसे शहीद दिवस के रूप में मनाया जाता है क्योंकि यह नौवें सिख गुरु तेग बहादुर की पुण्यतिथि है। ➲ उन्होंने गैर-मुसलमानों के ज़बरन धर्मांतरण का विरोध किया और वर्ष 1675 में मुगल बादशाह औरंगज़ेब द्वारा उनकी हत्या कर दी गई।

असम के चराइदेव मोईदाम

केंद्र ने इस वर्ष यूनेस्को विश्व विरासत स्थल के लिये असम में चराइदेव मोईदाम को नामित करने का निर्णय लिया है।

- पूर्वोत्तर भारत में सांस्कृतिक विरासत की श्रेणी में फिलहाल कोई विश्व विरासत स्थल नहीं है।
- चराइदेव मोईदाम का नामांकन ऐसे समय में महत्त्वपूर्ण हो गया है जब देश लचित बोरफुकन की 400वीं जयंती मना रहा है।

चराइदेव मोईदाम:

- चराइदेव मोईदाम/मैदाम , असम में ताई अहोम समुदाय की उत्तर मध्यकालीन (13वीं-19वीं शताब्दी) टीला दफन परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है।
- यह अहोम राजवंश के सदस्यों के नश्वर अवशेषों को प्रतिष्ठापित करता है, जिन्हें उनकी सामग्री के साथ दफनाया जाता था।
  - 18 वीं शताब्दी के बाद अहोम शासकों ने दाह संस्कार की हिंदू पद्धति को अपनाया और चराईदेव के मोईदाम में दाह संस्कार की हड्डियों एवं राख को दफनाना शुरू कर दिया।
- अब तक खोजे गए 386 मोईदाम में से अहोमों के टीले की दफन परंपरा के चराईदेव में 90 शाही समाधि सुव्यवस्थित ढंग से संरक्षित, सबसे अधिक प्रतिनिधित्त्व वाले और पूर्ण उदाहरण हैं।

अहोम साम्राज्य:

- **परिचय:**
  - वर्ष 1228 में असम की ब्रह्मपुत्र घाटी में स्थापित, अहोम साम्राज्य ने 600 वर्षों तक अपनी संप्रभुता बरकरार रखी।
  - छोलुंग सुकफा (Chaolung Sukapha) 13वीं शताब्दी के अहोम साम्राज्य के संस्थापक थे।
  - अहोम ने छह शताब्दियों तक असम पर शासन किया था। अहोम शासकों का इस भूमि पर नियंत्रण वर्ष 1826 की यांडाबू की संधि (Treaty of Yandaboo) होने तक था।
- **राजनीतिक व्यवस्था:**
  - अहोमों ने भुइयाँ (ज़मींदारों) की पुरानी राजनीतिक व्यवस्था को समाप्त कर एक नया राज्य बनाया।
  - अहोम राज्य बंधुआ मज़दूरों (Forced Labour) पर निर्भर था। राज्य के लिये इस प्रकार की मज़दूरी करने वालों को पाइक (Paik) कहा जाता था।
- **समाज:**
  - अहोम समाज को कुल/खेल (Clan/Khel) में विभाजित किया गया था। एक कुल/खेल का सामान्यत: कई गाँवों पर नियंत्रण होता था।
  - अहोम साम्राज्य के लोग अपने स्वयं के आदिवासी देवताओं की पूजा करते थे, फिर भी उन्होंने हिंदू धर्म और असमिया भाषा को स्वीकार किया।
    - हालाँकि अहोम राजाओं ने हिंदू धर्म अपनाने के बाद भी अपनी पारंपरिक मान्यताओं को पूरी तरह से नहीं छोड़ा।
- **सैन्य रणनीति:**
  - अहोम सेना की पूरी टुकड़ी में पैदल सेना, नौसेना, तोपखाने, हाथी, घुड़सवार सेना और जासूस शामिल थे।
    - युद्ध में इस्तेमाल किये जाने वाले मुख्य हथियारों में तलवार, भाला, बंदूक, तोप, धनुष और तीर शामिल थे।
  - अहोम सैनिकों को गोरिल्ला युद्ध (Guerilla Fighting) में विशेषज्ञता प्राप्त थी। उन्होंने ब्रह्मपुत्र नदी पर नाव का पुल (Boat Bridge) बनाने की तकनीक भी सीखी थी।

लचित बोरफुकन:

- 24 नवंबर, 1622 को जन्मे बोरफुकन को 1671 में सरायघाट की लड़ाई में उनके नेतृत्व के लिये जाना जाता था, जिसमें मुगल सेना के असम पर कब्ज़ा करने के प्रयास को विफल कर दिया गया था।
  - सरायघाट की लड़ाई 1671 में गुवाहाटी में ब्रह्मपुत्र के तट पर लड़ी गई थी।
  - इसे एक नदी पर सबसे बड़ी नौसैनिक लड़ाइयों में से एक माना जाता है जिसके परिणामस्वरूप मुगलों पर अहोम की जीत हुई।
- उन्हें महान नौसैनिक रणनीतियों से भारत की नौसेना को मज़बूत करने, अंतर्देशीय जल परिवहन को पुनर्जीवित करने और इससे जुड़े बुनियादी ढाँचे के निर्माण हेतु जाना जाता है।

- लचित बोरफुकन स्वर्ण पदक राष्ट्रीय रक्षा अकादमी के सर्वश्रेष्ठ कैडेट को दिया जाता है।
  - इस पदक की स्थापना 1999 में रक्षाकर्मियों को बोरफुकन की वीरता और बलिदान का अनुकरण करने हेतु प्रेरित करने के लिये की गई थी।

पराक्रम दिवस 2023

चर्चा में क्यों ?

पराक्रम दिवस (23 जनवरी) 2023 के अवसर पर अंडमान और निकोबार के 21 द्वीपों का नाम परमवीर चक्र पुरस्कार विजेताओं के नाम पर रखा गया है।

- नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वीप पर नेताजी को समर्पित एक राष्ट्रीय स्मारक बनाया जाएगा।
- पराक्रम दिवस स्वतंत्रता सेनानी सुभाष चंद्र बोस की 126वीं जयंती के अवसर पर मनाया जाता है।

द्वीपों के नामकरण का उद्देश्य:

- परमवीर चक्र पुरस्कार विजेताओं के नाम वाले द्वीप आने वाली पीढ़ियों के लिये प्रेरणा स्थल होंगे। लोग अब भारत के इतिहास को जानने एवं इन द्वीपों को देखने के लिये प्रोत्साहित होंगे।
  - परमवीर चक्र भारत का सर्वोच्च सैन्य अलंकरण है, जो युद्ध के दौरान ज़मीन पर, समुद्र या हवा में वीरता के विशिष्ट कार्यों को प्रदर्शित करने के लिये दिया जाता है।
- इसका उद्देश्य उन भारतीय नायकों को श्रद्धांजलि अर्पित करना है, जिनमें से कई ने भारत की संप्रभुता और अखंडता की रक्षा हेतु अपना बलिदान दिया था।
- द्वीपों का नाम मेजर सोमनाथ शर्मा, सूबेदार और मानद कैप्टन (तत्कालीन लांस नायक) करम सिंह, नायक जदुनाथ सिंह आदि के नाम पर रखा गया है।

नोट: वर्ष 2018 में रॉस द्वीप समूह का नाम बदलकर नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वीप, साथ ही नील द्वीप और हैवलॉक द्वीप का नाम बदलकर क्रमशः शहीद द्वीप और स्वराज द्वीप कर दिया गया था।

सुभाष चंद्र बोस:

- **जन्म:**
  - सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 को उड़ीसा के कटक शहर में हुआ था। उनकी माता का नाम प्रभावती दत्त बोस और पिता का नाम जानकीनाथ बोस था।
- **परिचय:**
  - वर्ष 1919 में बोस ने भारतीय सिविल सेवा (Indian Civil Services- ICS) परीक्षा पास की, हालाँकि कुछ समय बाद उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया।
  - वे स्वामी विवेकानंद की शिक्षाओं से अत्यधिक प्रभावित थे और उन्हें अपना आध्यात्मिक गुरु मानते थे।
  - उनके राजनीतिक गुरु चितरंजन दास थे।

- **कॉन्ग्रेस के साथ संबंध:**
  - उन्होंने बिना शर्त स्वराज (Unqualified Swaraj) अर्थात् स्वतंत्रता का समर्थन किया और मोतीलाल नेहरू रिपोर्ट का विरोध किया जिसमें भारत के लिये डोमिनियन (अधिराज्य) के दर्जे की बात कही गई थी।
  - उन्होंने वर्ष 1930 के नमक सत्याग्रह में सक्रिय रूप से भाग लिया और वर्ष 1931 में सविनय अवज्ञा आंदोलन के निलंबन तथा गांधी-इरविन समझौते पर हस्ताक्षर करने का विरोध किया।
  - वर्ष 1930 के दशक में वह जवाहरलाल नेहरू और एम.एन. रॉय के साथ कॉन्ग्रेस की वाम राजनीति में संलग्न रहे।
  - बोस ने वर्ष 1938 में हरिपुरा में कॉन्ग्रेस के अध्यक्ष का चुनाव जीता।
  - इसके पश्चात् वर्ष 1939 में उन्होंने त्रिपुरी में गांधी जी द्वारा समर्थित उम्मीदवार पट्टाभि सीतारमैय्या के विरुद्ध पुनः अध्यक्ष पद का चुनाव जीता।
  - गांधी जी के साथ वैचारिक मतभेद के कारण बोस ने कॉन्ग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया और कॉन्ग्रेस से अलग हो गए। उनकी जगह राजेंद्र प्रसाद को नियुक्त किया गया था।
  - कॉन्ग्रेस से अलग होकर उन्होंने 'द फॉरवर्ड ब्लॉक' नाम से एक नया दल बनाया। इसके गठन का उद्देश्य अपने गृह राज्य बंगाल में वाम राजनीति के आधार को और अधिक मज़बूत करना था।
- **इंडियन नेशनल आर्मी (आज़ाद हिन्द फौज):**
  - वह जुलाई 1943 में जर्मनी से सिंगापुर (जापान द्वारा नियंत्रित) पहुँचे, वहाँ से उन्होंने अपना प्रसिद्ध नारा 'दिल्ली चलो' जारी किया और 21 अक्टूबर, 1943 को आज़ाद हिंद सरकार और भारतीय राष्ट्रीय सेना के गठन की घोषणा की।

- INA का गठन पहली बार मोहन सिंह और जापानी मेजर इवाइची फुजिवारा के तहत किया गया था और इसमें ब्रिटिश-भारतीय सेना के युद्ध के भारतीय कैदी शामिल थे, जिन्हें मलायन (वर्तमान मलेशिया) तथा सिंगापुर अभियान में जापान द्वारा कब्ज़ा कर लिया गया था।
- INA ने वर्ष 1944 में इंफाल और बर्मा में भारत की सीमाओं के अंदर ब्रिटिश सेना से लड़ाई लड़ी।
- INA में सिंगापुर से भारतीय युद्ध कैदी और दक्षिण-पूर्व एशिया से भारतीय नागरिक दोनों शामिल थे। इनकी संख्या बढ़कर 50,000 हो गई।
- नवंबर 1945 में INA के लोगों पर मुकदमा चलाने के ब्रिटिश सरकार के एक कदम ने पूरे देश में बड़े पैमाने पर प्रदर्शनों को भड़का दिया।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस

जन्म

- 23 जनवरी, 1897 ('पराक्रम दिवस' के रूप में मनाया जाता है)

आपदा प्रबंधन में भारत में व्यक्तियों/संगठनों द्वारा प्रदान की गई निस्वार्थ सेवा सम्मानित करने हेतु हर साल 23 जनवरी को सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार की घोषणा की जाती है।

आरंभिक जीवन

- इंडियन सिविल सर्विसेज़ (ICS) परीक्षा उत्तीर्ण की (1919) लेकिन बाद में त्याग-पत्र दे दिया
- स्वामी विवेकानन्द को अपना आध्यात्मिक गुरु मानते थे
- समाचार पत्र- स्वराज

कॉन्ग्रेस (INC) में राजनीतिक जीवन

- बिना शर्त स्वराज (Unqualified Swaraj) अर्थात् स्व-शासन का समर्थन किया
- वर्ष 1930 के नमक सत्याग्रह में सक्रिय रूप से भाग लिया
- सविनय अवज्ञा आंदोलन के निलंबन तथा गांधी-इरविन समझौते (वर्ष 1931) पर हस्ताक्षर करने का विरोध किया
- हरिपुरा (1938) और त्रिपुरी (1939) में कॉन्ग्रेस के अध्यक्ष का चुनाव जीता
- गांधी जी से वैचारिक मतभेद के कारण कॉन्ग्रेस से इस्तीफा दिया (1939)
- राजनीतिक वामपंथ को मज़बूत बनाने हेतु एक नई पार्टी 'फॉरवर्ड ब्लॉक' की स्थापना

आज़ाद हिन्द फौज़/इंडियन नेशनल आर्मी (INA)

- जुलाई 1943 में जर्मनी से जापान-नियंत्रित सिंगापुर पहुँचे वहाँ से उन्होंने अपना प्रसिद्ध नारा 'दिल्ली चलो' जारी किया

उन्होंने 'जय हिन्द' का नारा भी दिया

- अक्तूबर 1943 में आज़ाद हिंद सरकार और INA के गठन की घोषणा की
- INA ने इंफाल (भारत) और बर्मा में मित्र देशों की सेनाओं का मुकाबला किया (1944)

इंडियन नेशनल आर्मी का गठन पहली बार मोहन सिंह और जापानी मेजर इविची फुजिवारा के नेतृत्त्व में किया गया था तथा इसमें मलय (वर्तमान मलेशिया) अभियान के दौरान सिंगापुर में जापान द्वारा कैद किये गए ब्रिटिश-भारतीय सेना के युद्ध बंदियों को शामिल किया गया था।

मृत्यु

- ऐसा माना जाता है कि वर्ष 1945 में उस समय उनका निधन हो गया जब उनका विमान ताइवान में दुर्घटनाग्रस्त हो गया था।

Drishti IAS

पाणिनि की अष्टाध्यायी और व्याकरण की सबसे बड़ी पहेली

हाल ही में कैंब्रिज के विद्वान डॉ. ऋषि राजपोपत ने संस्कृत की सबसे बड़ी पहेली- 'अष्टाध्यायी' में पाई जाने वाली व्याकरण की समस्या को हल करने का दावा किया है।

अष्टाध्यायी:

- 2,000 से अधिक वर्ष पहले लिखा गया, अष्टाध्यायी या 'आठ अध्याय', विद्वान पाणिनि द्वारा चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के अंत में लिखा गया एक प्राचीन ग्रंथ है।
- यह एक भाषायी लेख है जिसने मानक निर्धारित किया कि संस्कृत कैसे लिखी और बोली जानी है।
- यह भाषा के ध्वन्यात्मकता, वाक्य विन्यास और व्याकरण को गहराई से समझता है, इसमें एक "भाषा मशीन" भी शामिल है, जो उपयोगकर्त्ताओं को किसी भी संस्कृत शब्द के मूल और प्रत्यय में प्रवेश करने एवं बदले में व्याकरणिक रूप से सही शब्द तथा वाक्य प्राप्त करने में मदद करता है।
- अष्टाध्यायी ने 4,000 से अधिक व्याकरणिक नियम निर्धारित किये है।
  - बाद के भारतीय व्याकरण जैसे पतंजलि का महाभाष्य (दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व) और जयादित्य की कासिका वृत्ति तथा वामन (7वीं शताब्दी ईस्वी), अधिकतर पाणिनि पर टीकाएँ थीं।

पहेली (Puzzle):

- **भ्रामक नियम:**
  - अष्टाध्यायी में दो या दो से अधिक व्याकरण के नियम एक साथ लागू हो सकते थे, जिससे भ्रम पैदा होता था।
  - पाणिनि ने इसका समाधान करने के लिये एक 'मेटा-नियम' (नियमों को नियंत्रित करने वाला नियम) प्रस्तुत किया था, जिसकी ऐतिहासिक रूप से व्याख्या की गई थी कि यदि समान प्रकार के दो नियमों में विवाद होता है, तो 'अष्टाध्यायी' के क्रम में बाद में आने वाले नियम मान्य होगा।
  - हालाँकि यह अपवाद पैदा करता रहा, जिसके लिये विद्वानों को अतिरिक्त नियम लिखते रहना पड़ा। यहीं से डॉ ऋषि राजपोपत की खोज हुई।
  - हालाँकि इसने अपवादों को बढ़ावा दिया जिससे नए नियमों का निर्माण आवश्यक हो गया। यहीं कारण है कि डॉ. ऋषि राजपोपत ने नवीन नियम प्रस्तुत किया।
- **समाधान:**
  - विद्वानों ने यह तर्क देते हुए एक सरल दृष्टिकोण अपनाया कि इतिहास में मेटा-नियम की गलत व्याख्या की गई है, वास्तव में पाणिनि का मतलब यह था कि किसी शब्द के बाएँ और दाएँ पक्षों पर लागू होने वाले नियमों के संबंध में पाठकों को दाएँ हाथ के नियम का उपयोग करना चाहिये।
  - इस तर्क का उपयोग करते हुए डॉ. राजपोपत ने पाया कि 'अष्टाध्यायी' अंततः एक सटीक 'भाषा मशीन' बन सकती है, जो लगभग प्रत्येक बार व्याकरणिक रूप से ध्वनि शब्दों और वाक्यों का निर्माण करती है।
- **महत्त्व:**
  - इस खोज से अब पाणिनि प्रणाली का उपयोग करके लाखों संस्कृत शब्दों का निर्माण करना संभव हो सकता है और चूँकि उनके व्याकरण के नियम सटीक और सूत्रबद्ध थे, वे कंप्यूटर सिखाए जा सकने वाले संस्कृत भाषा के एल्गोरिद्म के रूप में कार्य कर सकते हैं।

भाषा विज्ञान के जनक पाणिनि:

- संभवतः चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में पाणिनि के विषय में जानकारी मिलती है, यह सिकंदर की विजय और मौर्य साम्राज्य की स्थापना का युग था, इसके अतिरिक्त उन्हें 6वीं शताब्दी ईसा पूर्व, जो कि बुद्ध और महावीर काल रहा, का भी माना जाता है।
- वह संभवतः सलातुरा (गांधार) में रहते थे, जो आज के समय में उत्तर-पश्चिम पाकिस्तान में स्थित है, और संभवतः तक्षशिला के महान विश्वविद्यालय से भी जुड़े थे। यहीं से कौटिल्य और चरक को शासन कला और चिकित्सा के क्षेत्र में अपनी महत्त्वपूर्ण पहचान बनाने में मदद मिली।
- पाणिनि के महान व्याकरण, 'अष्टाध्यायी' की रचना के समय तक संस्कृत वस्तुतः अपने शास्त्रीय रूप में पहुँच चुकी थी और उसके बाद बहुत कम विकसित हुई।
- पाणिनि का व्याकरण, जिसका आधार पहले के कई व्याकरणविदों द्वारा किया गया कार्य था, ने संस्कृत भाषा को प्रभावी रूप से स्थिरता प्रदान की।
- पहले के कार्यों ने आधार को एक शब्द के मूल तत्त्व के रूप में मान्यता दी थी तथा कुछ 2,000 एकाक्षरिक आधारों को वर्गीकृत किया था, जिसे उपसर्ग, प्रत्यय एवं विभक्ति के साथ भाषा के सभी शब्दों को प्रदान करने का विचार था।

सरोजिनी नायडू- द नाइटिंगेल ऑफ इंडिया

13 फरवरी को सरोजिनी नायडू की जयंती मनाई जाती है। उन्हें भारतीय कोकिला (सरोजिनी नायडू- द नाइटिंगेल ऑफ इंडिया) के नाम से जाना जाता था।

- भारत में सरोजिनी नायडू की जयंती को राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है।

सरोजिनी नायडू:

- **परिचय:**
  - सरोजिनी नायडू, एक भारतीय स्वतंत्रता कार्यकर्त्ता, कवि और राजनीतिज्ञ थीं।
  - उनका जन्म 13 फरवरी, 1879 को हैदराबाद, भारत में हुआ था।
  - वर्ष 1905 में बंगाल के विभाजन के बाद वह भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल हो गईं।
  - ब्रिटिश सरकार ने भारत में प्लेग महामारी के दौरान उनकी उत्कृष्ट सेवा के लिये सरोजिनी नायडू को 'कैसर-ए-हिंद' पदक से सम्मानित किया।

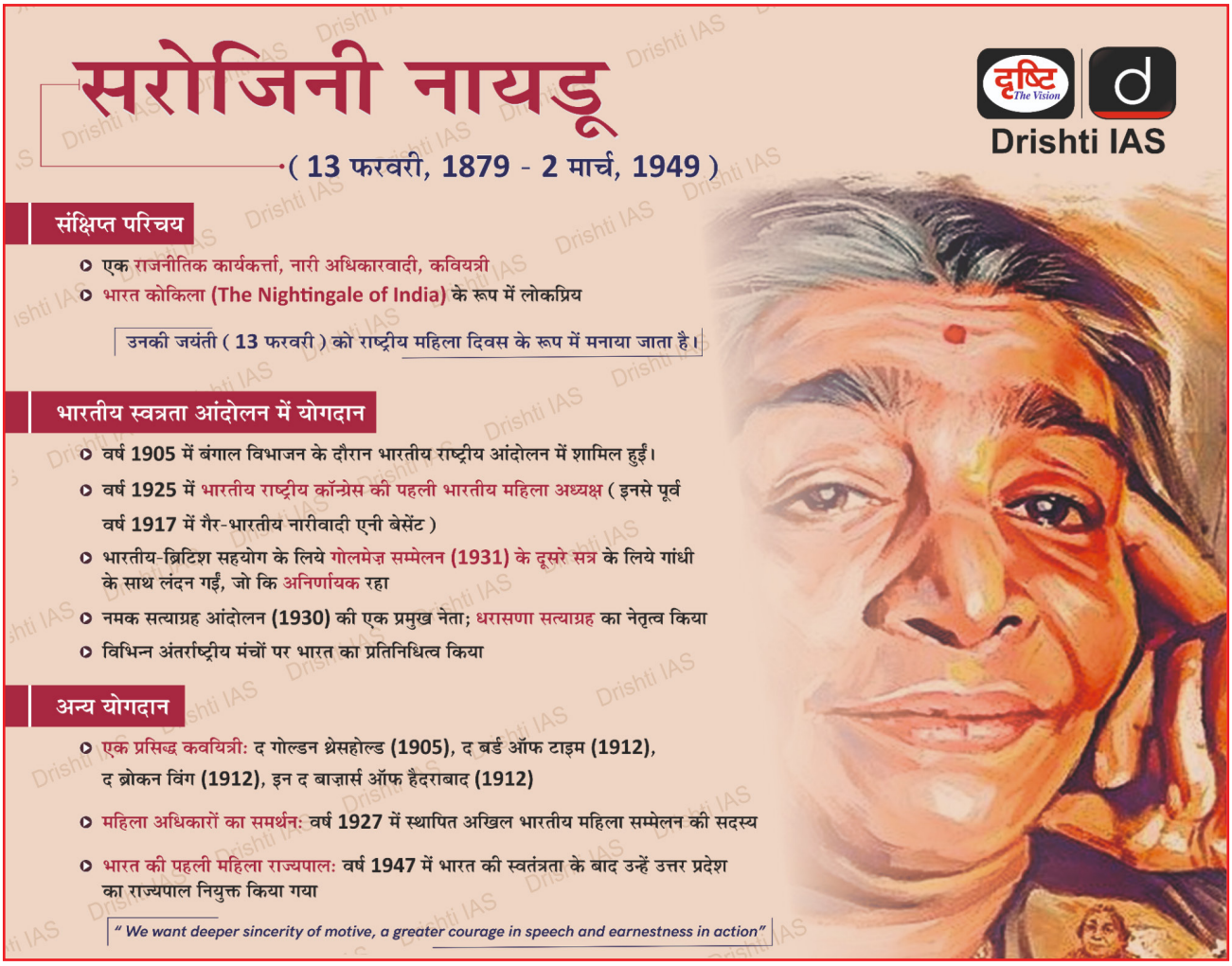

- **भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान:**
  - INC की पहली भारतीय महिला अध्यक्ष: सरोजिनी नायडू को वर्ष 1925 (कानपुर सत्र) में भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस (INC) की पहली भारतीय महिला अध्यक्ष के रूप में चुना गया था और वर्ष 1928 तक वे इस पद पर बनी रहीं।
    - एनी बेसेंट कॉन्ग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष थीं जिन्होंने वर्ष 1917 में इसकी अध्यक्षता की थी।
  - असहयोग आंदोलन में भागीदारी: नायडू ने वर्ष 1920 में गांधी द्वारा शुरू किये गए असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और विभिन्न स्वतंत्रता गतिविधियों में शामिल होने के कारण वे कई बार गिरफ्तार भी हुईं।
  - नमक सत्याग्रह का नेतृत्त्व: वर्ष 1930 में भारत में नमक उत्पादन पर ब्रिटिश एकाधिकार के खिलाफ अहिंसक विरोध, नमक सत्याग्रह का नेतृत्त्व करने के लिये गांधी ने नायडू का चयन किया था।

- भारत छोड़ो आंदोलन: वर्ष 1942 में सरोजिनी नायडू को "भारत छोड़ो" आंदोलन के दौरान गिरफ्तार किया गया और गांधीजी के साथ 21 महीने के लिये जेल में डाल दिया गया।
- जागरूकता बढ़ाने हेतु विदेश यात्रा: स्वतंत्रता हेतु भारत के संघर्ष के बारे में जागरूकता बढ़ाने और अंतर्राष्ट्रीय समर्थन जुटाने के लिये नायडू ने संयुक्त राज्य अमेरिका तथा यूनाइटेड किंगडम सहित विभिन्न देशों की यात्रा की।
  - उन्होंने विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भी भारत का प्रतिनिधित्त्व किया और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन एवं महिलाओं के अधिकारों के बारे में बात की।

एक राजनेता के रूप में योगदान:

- दूसरा गोलमेज़ सम्मेलन: भारतीय-ब्रिटिश सहयोग (1931) हेतु गोलमेज़ सम्मेलन के अनिर्णायक दूसरे सत्र के लिये वह गांधीजी के साथ लंदन गई थीं।
- उत्तर प्रदेश की राज्यपाल: भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद नायडू को उत्तर प्रदेश के राज्यपाल के रूप में नियुक्त किया गया, जो भारत में राज्यपाल का पद संभालने वाली पहली महिला बनीं।

अन्य योगदान:

- प्रसिद्ध कवयित्री: नायडू एक प्रसिद्ध कवयित्री थीं और उन्होंने अंग्रेज़ी तथा उर्दू दोनों में रचनाएँ कीं।
  - वर्ष 1912 में प्रकाशित 'इन द बज़ार्स ऑफ हैदराबाद" उनकी सबसे लोकप्रिय कविताओं में से एक है।
  - उनके अन्य कार्यों में "द गोल्डन थ्रेशोल्ड (1905)", "द बर्ड ऑफ टाइम (1912)" और "द ब्रोकन विंग (1912)" शामिल हैं।
- महिला सशक्तीकरण: नायडू महिलाओं के अधिकारों की प्रबल समर्थक थीं और उन्होंने भारत में महिलाओं को सशक्त बनाने हेतु अथक प्रयास किया।
  - वह अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की सदस्य भी थीं और उन्होंने भारत में महिलाओं की स्थिति में सुधार हेतु काम किया।

मृत्यु:

- 2 मार्च, 1949 को लखनऊ, भारत में उनका निधन हो गया।

वर्तमान समय में सरोजिनी नायडू की प्रासंगिकता:

- सरोजिनी नायडू एक बहुआयामी व्यक्तित्त्व की थीं और भारत एवं विश्व भर में महिलाओं के लिये एक आदर्श बनी हुई हैं। उनके साहस, समर्पण और नेतृत्त्व ने लाखों भारतीयों को प्रेरित किया तथा आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित कर रहा है।

ASI ने खोजा 1300 वर्ष पुराना बौद्ध स्तूप

हाल ही में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (Archaeological Survey of India- ASI) ने ओडिशा के जाजपुर ज़िले में खोंडालाइट खनन स्थल पर 1,300 वर्ष पुराने स्तूप की खोज की है।

- यह वह स्थान है जहाँ से पुरी में 12वीं शताब्दी के श्री जगन्नाथ मंदिर के सौंदर्यीकरण परियोजना हेतु खोंडालाइट पत्थरों की आपूर्ति की गई थी।

प्रमुख बिंदु

- यह स्तूप 4.5 मीटर ऊँचा हो सकता है और प्रारंभिक आकलन से पता चला है कि यह 7वीं या 8वीं शताब्दी का हो सकता है।
- यह परभदी में पाया गया था जो ललितगिरि के पास स्थित है, एक प्रमुख बौद्ध परिसर है जिसमें बड़ी संख्या में स्तूप और मठ हैं।
  - एक पत्थर के ताबूत के अंदर बुद्ध के अवशेष वाले एक विशाल स्तूप की खोज के कारण ललितगिरि बौद्ध स्थल को तीन साइटों (ललितगिरि, रत्नागिरि और उदयगिरि) में सबसे पवित्र माना जाता है।

खोंडालाइट चट्टान:

- खोंडालाइट एक प्रकार की कायांतरित चट्टान है जो भारत के पूर्वी घाट में विशेष रूप से ओडिशा राज्य में पाई जाती है। इसका नाम चट्टानों के खोंडालाइट समूह के नाम पर रखा गया है, जिसके बारे में माना जाता है कि यह लगभग 1.6 अरब वर्ष पहले प्रोटेरोज़ोइक युग के दौरान बनी थी।
- खोंडालाइट मुख्य रूप से फेल्डस्पार, क्वार्ट्ज़ और अभ्रक से बनी है एवं गुलाबी-ग्रे रंग इसकी विशेषता है। इसे सामान्यत: निर्माण में एक सजावटी पत्थर के रूप में उपयोग किया जाता है तथा विशेष रूप से स्थायित्व और अपक्षय के प्रतिरोध हेतु बेशकीमती है।
- प्राचीन मंदिर परिसरों में खोंडालाइट पत्थरों का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता था। कुछ परियोजनाओं जैसे- विरासत सुरक्षा क्षेत्र, जगन्नाथ बल्लभ तीर्थ केंद्र आदि के सौंदर्य को बनाए रखने हेतु उनका व्यापक रूप से उपयोग करने का प्रस्ताव है।

स्तूप:

- **परिचय:** स्तूप वैदिक काल से भारत में प्रचलित शवाधान टीले थे।
- **वास्तुकला:** स्तूप में एक बेलनाकार ड्रम होता है जिसमें शीर्ष गोल अंडाकार, हर्मिका एवं छत्र होता है।
  - अंडाकार: बुद्ध के अवशेषों को ढँकने के लिये मिट्टी के टीले का प्रतीकात्मक गोलार्द्ध टीला (कई स्तूपों में वास्तविक अवशेषों का उपयोग किया गया था)।

- Anda: Hemispherical mound symbolic of the mound of dirt used to cover Buddha's remains (in many stupas actual relics were used).
- हरमिका: टीले के ऊपर चौकोर रेलिंग।
- छत्र: ट्रिपल छत्र को सहारा देने वाला केंद्रीय स्तंभ।

➲ **प्रयुक्त सामग्री:** स्तूप का मुख्य भाग कच्ची ईंटों से बना था, जबकि बाहरी सतह पकी हुई ईंटों का उपयोग करके बनाई गई थी, जिन्हें बाद में प्लास्टर और मेढ़ी (Medhi) की एक मोटी परत से ढक दिया गया था और तोरण को लकड़ी की मूर्तियों से सजाया गया था।

➲ **उदाहरण:**

- मध्य प्रदेश में सांची स्तूप अशोक स्तूपों में सबसे प्रसिद्ध है।
- उत्तर प्रदेश में पिपरहवा स्तूप सबसे पुराना स्तूप है।
- बुद्ध की मृत्यु के बाद बनाए गए स्तूप: राजगृह, वैशाली, कपिलवस्तु, अल्लकप्पा, रामग्राम, वेथापिडा, पावा, कुशीनगर और पिप्पलिवन।
- बैराट, राजस्थान में स्तूप: एक गोलाकार टीला और एक प्रदक्षिणा पथ के साथ भव्य स्तूप।

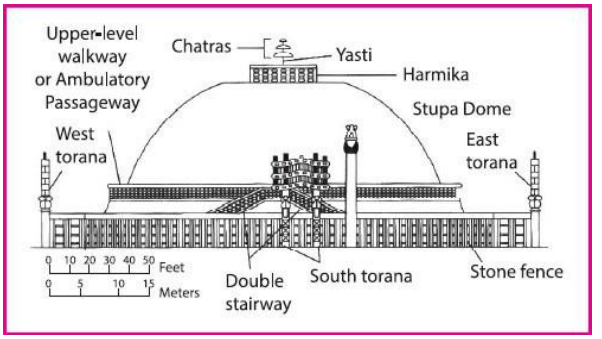

डिकिन्सोनिया जीवाश्म

डिकिन्सोनिया जीवाश्म, जिसके बारे में वैज्ञानिकों ने वर्ष 2021 में भारत के भीमबेटका रॉक शेल्टर में खुदाई करने का दावा किया था, के संबंध में सूचना गलत साबित हुई है।

- शोधकर्त्ताओं को इस स्थान की गहन जाँच करने पर पता चला कि डिकिन्सोनिया जीवाश्म वास्तव में एक चट्टान पर फैला मधुमक्खी का मोम था।

डिकिन्सोनिया:

- **परिचय:** डिकिन्सोनिया विलुप्त, कोमल शरीर वाले, समुद्री जीवों की एक प्रजाति है, जो लगभग 550 से 560 मिलियन वर्ष पूर्व एडियाकरन काल के दौरान पाए जाते थे।
  - ये जीव लगभग 30 मिलियन वर्षों तक जीवन अस्तित्व के कैम्ब्रियन काल से पूर्व पृथ्वी पर पाए जाने वाले शुरुआती जटिल जीवों में से थे।
- **विशेषताएँ:** अंडाकार या पत्ती के आकार की संरचना डिकिन्सोनिया जीवाश्मों की विशेषता है, ये आकार में एक इंच से भी कम से लेकर चार फीट से अधिक लंबे हो सकते हैं। इन जीवों के शरीर चपटे थे तथा उनमें कोई कठोर भाग नहीं था, जैसे खोल या हड्डियाँ, जिसका अर्थ है कि वे आसानी से जीवाश्म नहीं बनते हैं और अक्सर चट्टानों में छापों (Impressions) के रूप में संरक्षित होते हैं।
- प्रकृति और अन्य जीवों के साथ संबंध: डिकिन्सोनिया की प्रकृति और अन्य जीवों के साथ संबंध अभी भी वैज्ञानिकों के बीच विवाद का विषय है। कुछ अध्ययनों से पता चलता है कि वे जेलीफिश या अन्य निडारियन (Cnidarians) से संबंधित हो सकते हैं, जबकि अन्य का दावा है कि वे जीवों का एक अलग 'विलुप्त संघ' से थे जो किसी भी आधुनिक जीवों से निकटता से संबंधित नहीं हैं।
- **महत्त्व:** उनकी गंभीर प्रकृति के बावजूद डिकिन्सोनिया जीवाश्म पृथ्वी पर जटिल पशु-जीवन के शुरुआती विकास को समझने के लिये महत्त्वपूर्ण हैं।
- इसने अंतिम एडियाकरन अवधि के दौरान शारीरिक संरचना के विकास और पारिस्थितिक अंत:क्रियाओं के बारे में महत्त्वपूर्ण साक्ष्य प्रदान किये हैं।

भीमबेटका रॉक शेल्टर के मुख्य तथ्य:

- **इतिहास,अवधि एवं सीमा:**
  - भीमबेटका रॉक शेल्टर मध्य भारत में एक पुरातात्त्विक स्थल है जिसका विस्तार प्रागैतिहासिक पुरापाषाण और मेसोलिथिक काल के साथ-साथ ऐतिहासिक काल तक देखा गया।
  - यह भारत में मानव जीवन की शुरुआत एवं एश्यूलियन काल के पाषाण युग के साक्ष्य प्रदर्शित करता है।
  - यह एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है जिसमें सात पहाड़ियाँ हैं और 10 किमी. में फैले 750 से अधिक शैलाश्रय हैं।
- **खोज:** भीमबेटका रॉक शेल्टर की खोज वी.एस. वाकणकर द्वारा वर्ष 1957 में की गई थी।
- **स्थान:** यह मध्य प्रदेश में होशंगाबाद और भोपाल के मध्य रायसेन ज़िले में स्थित है।
  - यह विंध्य पर्वत की तलहटी में भोपाल से लगभग 40 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में स्थित है।

- **पेंटिंग्स:** भीमबेटका के कुछ रॉक शेल्टर में प्रागैतिहासिक गुफा चित्र हैं और ये सबसे पुराने लगभग 10,000 वर्ष पुराने हैं (8,000 ईसा पूर्व), जो भारतीय मेसोलिथिक के अनुरूप हैं।
  - ये चित्र अधिकांश गुफाओं की दीवारों पर लाल और सफेद रंग से बने हैं।
  - रॉक कला के इस रूप में कई विषयों को शामिल किया गया था और इसमें गायन, नृत्य, शिकार तथा यहाँ रहने वाले लोगों की अन्य सामान्य गतिविधियों जैसे दृश्यों को दर्शाया गया था।
    - भीमबेटका की सबसे पुरानी गुफा पेंटिंग लगभग 12,000 वर्ष पहले की मानी जाती है।

कीलादी निष्कर्ष

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI) ने संगम युग स्थल पर खुदाई के पहले दो चरणों के दौरान निष्कर्षों और उनके महत्त्व पर एक विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की है।

- इसके अतिरिक्त शिवगंगा में कीलादी साइट संग्रहालय का भी निर्माण हो रहा है, जिसमें अब तक खोजी गई 18,000 से अधिक महत्त्वपूर्ण कलाकृतियाँ प्रदर्शित की जाएंगी।

कीलादी के बारे में मुख्य तथ्य:

- कीलादी दक्षिण तमिलनाडु के शिवगंगा ज़िले की एक छोटी-सी बस्ती है। यह मंदिरों के शहर मदुरै से लगभग 12 किमी. दक्षिण-पूर्व में वैगई नदी के किनारे स्थित है।
- वर्ष 2015 से यहाँ की गई खुदाई से साबित होता है कि तमिलनाडु में वैगई नदी के तट पर संगम युग में एक शहरी सभ्यता मौजूद थी।

संगम काल:

- 'संगम' शब्द संस्कृत शब्द संघ का तमिल रूप है जिसका अर्थ व्यक्तियों अथवा संस्था का समूह होता है।
- तमिल संगम कवियों की एक अकादमी थी जो पांड्य राजाओं के संरक्षण में तीन अलग-अलग कालों और स्थानों पर विकसित हुई।
- संगम साहित्य, जो ज़्यादातर तीसरे संगम से संकलित किया गया था, ईसाई काल की शुरुआत के दौरान लोगों की दैनंदिन स्थितियों के संबंध में विवरण प्रदान करता है।
  - यह सार्वजनिक और सामाजिक गतिविधियों जैसे- सरकार, युद्ध दान, व्यापार, पूजा, कृषि आदि से संबंधित धर्मनिरपेक्ष मामले से संबंधित है।
  - संगम साहित्य में प्रारंभिक तमिल रचनाएँ (जैसे तोल्काप्पियम), दस कविताएँ (पट्टुपट्टू), आठ संकलन (एट्टुटोगई) और अठारह लघु रचनाएँ (पदिनेंकिलकनक्कू) और तीन महाकाव्य शामिल हैं।

तमिल-ब्राह्मी लिपि:

- ब्राह्मी लिपि तमिलों द्वारा प्रयोग की जाने वाली सबसे पहली लिपि थी।
- उत्तर प्राचीन और प्रारंभिक मध्ययुगीन काल में उन्होंने एक नई कोणीय लिपि विकसित करना आरंभ किया, जिसे ग्रन्थ लिपि (Grantha Script) कहा जाता है, जिससे आधुनिक तमिल की उत्पत्ति हुई।

वैगई नदी:

- यह पूर्व की ओर बहने वाली नदी है।
- वैगई नदी बेसिन कावेरी और कन्याकुमारी के बीच स्थित 12 बेसिनों में एक महत्त्वपूर्ण बेसिन है।
- यह बेसिन पश्चिम में कार्डमम पहाड़ियों और पलानी पहाड़ियों से एवं पूर्व में पाक जलडमरूमध्य तथा पाक खाड़ी से घिरा है।

युद्ध स्मारक 1857 के विद्रोह की कहानी बताता है

चर्चा में क्यों?

1857 के विद्रोह के दौरान ब्रिटिश पक्ष से लड़ने वालों को सम्मानित करने के लिये वर्ष 1863 में युद्ध स्मारक (नई दिल्ली) बनाया गया था, लेकिन आज़ादी के 25 साल बाद इसे उन भारतीयों की याद में फिर से समर्पित किया गया, जिन्होंने अंग्रेज़ों से लड़ते हुए अपनी जान गँवाई थी।

- स्मारक में अष्टकोणीय टॉवर के सभी किनारों पर धनुषाकार संगमरमर-समर्थित खाँचे के साथ एक सामान्य गॉथिक डिज़ाइन है।

विद्रोह के नेता:

विद्रोह का स्थान	भारतीय नेता	ब्रिटिश अधिकारी जिन्होंने विद्रोह को दबा दिया
दिल्ली	बहादुर शाह द्वितीय	जॉन निकोलसन
लखनऊ	बेगम हजरत महल	हेनरी लॉरेंस
कानपुर	नाना साहेब	सर कॉलिन कैम्पबेल
झांसी एवं ग्वालियर	लक्ष्मी बाई और तात्या टोपे	जनरल ह्यूरोज़
बरेली	खान बहादुर खान	सर कॉलिन कैम्पबेल
इलाहाबाद और बनारस	मौलवी लियाकत अली	कर्नल ओनसेल
बिहार	कुंवर सिंह	विलियम टेलर

विद्रोह के विफल होने का कारण:

- **सीमित विद्रोह:** हालाँकि विद्रोह काफी व्यापक था, किंतु देश का एक बड़ा हिस्सा इससे अप्रभावित रहा।
  - दक्षिणी प्रांत और बड़ी रियासतें, हैदराबाद, मैसूर, त्रावणकोर और कश्मीर, साथ ही राजपूताना के छोटे राज्य विद्रोह में शामिल नहीं हुए।
- **प्रभावी नेतृत्व की कमी:** विद्रोहियों के पास एक प्रभावी नेता का अभाव था। यद्यपि नाना साहेब, तात्या टोपे और रानी लक्ष्मीबाई के रूप में वीर नेता थे, तथापि वे आंदोलन को प्रभावी समन्वित नेतृत्त्व प्रदान नहीं कर सके।
- **सीमित संसाधन:** विद्रोहियों के पास पुरुष और धन जैसे संसाधनों की कमी थी। दूसरी ओर, अंग्रेज़ों को भारत में पुरुष, धन और हथियारों की निरंतर आपूर्ति होती रही।
- **मध्य वर्ग की कोई भागीदारी नहीं:** अंग्रेज़ी शिक्षित मध्यम वर्ग, बंगाल के अमीर व्यापारियों एवं ज़मींदारों ने विद्रोह को दबाने में अंग्रेज़ो की मदद की।

बौद्ध धर्म

दृष्टि The Vision
Drishti IAS

उत्पत्ति

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व, गौतम बुद्ध की शिक्षाओं पर आधारित

मुख्य विशेषताएँ

- सार - आत्मज्ञान की प्राप्ति (निर्वाण)
- सर्वोच्च देवता - कोई नहीं

सिद्धांत

- अति से बचें; मध्यम मार्ग (मध्य मार्ग) का पालन करें
- व्यक्तिवादी घटक (हर कोई अपनी खुशी के लिये स्वयं ज़िम्मेदार है)
- चार महान सत्य:
  - दुख (दु:ख)- संसार दुखों से भरा हुआ है
  - समुदय- प्रत्येक दुख का एक कारण है
  - निरोध- दुखों का निवारण किया जा सकता है
  - यह अथांग मग्गा (आष्टांगिक मार्ग) का पालन करके प्राप्त किया जा सकता है।
- आष्टांगिक मार्ग:
  - सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाक, सम्यक कर्मांत, सम्यक आजीव, सम्यक व्यायाम, सम्यक स्मृति, सम्यक समाधि

बौद्ध धर्म अस्वीकार करता है

- वेदों की प्रामाणिकता
- आत्मा की अवधारणा (जैन धर्म के विपरीत)

प्रमुख बौद्ध ग्रंथ

- सुत्त पिटक (बुद्ध की प्रमुख शिक्षाएँ - धम्म)
- विनयपिटक (भिक्षुओं/ननियों के लिये आचरण के नियम)
- अभिधम्म पिटक (दार्शनिक विश्लेषण)
- अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथ- दिव्यवदान, दीपवंश, महावंश, मिलिंद पन्हो

पहली बौद्ध संगीति में बुद्ध की शिक्षाओं को 3 पिटकों में विभाजित किया गया था

इन शिक्षाओं को 25वीं शताब्दी ई.पू में पाली भाषा में लिखा गया था।

बौद्ध परिषद

बौद्ध परिषद	संरक्षक	स्थान	अध्यक्ष	वर्ष
पहली	अजातशत्रु	राजगृह	महाकस्यप	483 ई.पू.
दूसरी	कालाशोक	वैशाली	सुबुकामि	383 ई.पू.
तीसरी	अशोक	पाटलिपुत्र	मोगालिपुत्र	250 ई.पू.
चौथी	कनिष्क	कुण्डलवन (कश्मीर)	वसुमित्र	72 ई.

वैकोम सत्याग्रह

चर्चा में क्यों ?

वर्ष 2024 में वैकोम सत्याग्रह के सौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में केरल और तमिलनाडु के मुख्यमंत्रियों ने संयुक्त रूप से इसके शताब्दी समारोह का उद्घाटन किया।

वैकोम सत्याग्रह:

- **पृष्ठभूमि:**
  - त्रावणकोर में कुछ सबसे कठोर, परिष्कृत और निर्दयी सामाजिक मानक एवं रीति-रिवाज़ थे जो एक सामंती, सैन्यवादी और क्रूर सरकार की रियासत थी।
    - एझावा और पुलाय जैसी निचली जातियों को अपवित्र माना जाता था तथा उन्हें उच्च जातियों से दूर रखने के लिये विभिन्न नियम बनाए गए थे।
    - इनमें केवल मंदिर में प्रवेश पर ही नहीं बल्कि मंदिरों के आसपास की सड़कों पर चलने पर भी प्रतिबंध था।
- **नेतागणों का योगदान:**
  - वर्ष 1923 में माधवन ने अखिल भारतीय कॉन्ग्रेस समिति की काकीनाडा बैठक में इस मुद्दे को एक प्रस्ताव के रूप में प्रस्तुत किया। इसके बाद जनवरी 1924 में केरल प्रदेश कॉन्ग्रेस समिति द्वारा गठित कॉन्ग्रेस अस्पृश्यता समिति ने इसे आगे बढ़ाया।
  - माधवन, के.पी. केशव मेनन जो केरल प्रदेश कॉन्ग्रेस समिति के तत्कालीन सचिव थे और कॉन्ग्रेस नेता एवं शिक्षाविद के. केलप्पन (जिन्हें केरल के गांधी के नाम से भी जाना जाता है) को वैकोम सत्याग्रह आंदोलन का अग्रदूत माना जाता है।
- **सत्याग्रह के अग्रणी कारक:**
  - ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा समर्थित ईसाई मिशनरियों ने अपनी पहुँच का विस्तार किया था और एक दमनकारी व्यवस्था के चंगुल से बचने के लिये कई निम्न जातियों ने ईसाई धर्म अपना लिया था।
  - महाराजा अयिल्यम थिरुनाल ने कई प्रगतिशील सुधार किये।
    - इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण सभी के लिये मुफ्त प्राथमिक शिक्षा के साथ एक आधुनिक शिक्षा प्रणाली की शुरुआत थी, यहाँ तक कि यह शिक्षा निम्न जातियों के लिये भी उपलब्ध थी।
- **सत्याग्रह की शुरुआत:**
  - 30 मार्च, 1924 को सत्याग्रहियों ने वर्जित सार्वजनिक सड़कों पर जुलूस निकाला। जुलूस को उस जगह से 50 गज की दूरी पर रोक दिया गया था जहाँ सड़कों पर (वैकोम महादेव मंदिर के आसपास) चलने के खिलाफ उत्पीड़ित समुदायों को चेतावनी देने वाला बोर्ड लगाया गया था।
  - गोविंद पणिक्कर (नायर), बाहुलेयान (एझवा) और कुंजप्पु (पुलैया) ने खादी वस्त्र एवं खादी की टोपी पहनकर निषेधात्मक आदेशों का उल्लंघन किया।
  - पुलिस के रोकने पर तीनों लोग विरोध में सड़क पर बैठ गए जिन्हें बाद में गिरफ्तार कर लिया गया।
  - इसके बाद प्रतिदिन तीन अलग-अलग समुदायों के तीन स्वयंसेवकों को निषिद्ध सड़कों पर चलने के लिये भेजा गया।
    - इस प्रकार एक सप्ताह के भीतर आंदोलन के सभी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया।
- **महिलाओं की भूमिका:**
  - पेरियार की पत्नी नागम्मई और बहन कन्नमल ने लड़ाई में अभूतपूर्व भूमिका निभाई।
- **गांधीजी का आगमन:**
  - गांधीजी ने मार्च 1925 में वैकोम जाकर विभिन्न जाति समूहों के नेताओं के साथ कई चर्चाएँ कीं तथा महारानी रीजेंट से उसके वर्कला शिविर में मुलाकात की।
  - गांधीजी और डब्ल्यू.एच. पिट (त्रावणकोर के पुलिस आयुक्त) के बीच परामर्श के बाद 30 नवंबर, 1925 को वैकोम सत्याग्रह को आधिकारिक तौर पर वापस ले लिया गया।
  - सभी कैदियों की रिहाई तथा सड़कों तक पहुँच प्रदान करने के लिये एक समझौता हुआ।
- **मंदिर प्रवेश उद्घोषणा:**
  - वर्ष 1936 में त्रावणकोर के महाराजा द्वारा ऐतिहासिक मंदिर प्रवेश उद्घोषणा पर हस्ताक्षर किये गए, जिसने मंदिरों में प्रवेश पर सदियों पुराने प्रतिबंध को हटा दिया।

डॉ. भीमराव अंबेडकर का जीवन और विरासत

चर्चा में क्यों ?

देश भर में 14 अप्रैल, 2023 को डॉ. भीमराव अंबेडकर जयंती मनाई गई।

डॉ. भीमराव अंबेडकर:

- **परिचय:**
  - डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर एक प्रमुख भारतीय विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, समाज सुधारक और राजनीतिज्ञ थे।
  - उनका जन्म 14 अप्रैल, 1891 में मध्य प्रदेश के महू में हुआ था।
    - उनके पिता सूबेदार रामजी मालोजी सकपाल पढ़े-लिखे व्यक्ति और संत कबीर के अनुयायी थे।
- **शिक्षा:**
  - अंबेडकर ने बॉम्बे विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और आगे की पढ़ाई न्यूयॉर्क में कोलंबिया विश्वविद्यालय एवं लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में की।

योगदान:

- वर्ष 1924 में उन्होंने दलित वर्गों के कल्याण हेतु एक संगठन की शुरुआत की और वर्ष 1927 में दलित वर्गों की स्थिति को उजागर करने के लिये बहिष्कृत भारत समाचार पत्र का प्रकाशन शुरू किया।
  - उन्होंने मार्च 1927 में महाड सत्याग्रह का भी नेतृत्त्व किया।
- उन्होंने तीनों गोलमेज़ सम्मेलनों में भाग लिया।
- वर्ष 1932 में डॉ. अंबेडकर ने महात्मा गांधी के साथ पूना पैक्ट पर हस्ताक्षर किये जिसमें दलित वर्गों (कम्युनल अवार्ड) हेतु अलग निर्वाचक मंडल के विचार को त्याग दिया गया।
- वर्ष 1936 में उन्होंने दलित वर्गों के हितों की रक्षा हेतु इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी का गठन किया।
- वर्ष 1942 में डॉ. अंबेडकर को भारत के गवर्नर जनरल की कार्यकारी परिषद में श्रम सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया और वर्ष 1946 में बंगाल से संविधान सभा हेतु चुना गया।
  - वह प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे और उन्हें भारतीय संविधान के जनक के रूप में याद किया जाता है।
- डॉ. अंबेडकर वर्ष 1947 में स्वतंत्र भारत के पहले मंत्रिमंडल में कानून मंत्री बने।
  - हिंदू कोड बिल पर मतभेदों को लेकर उन्होंने वर्ष 1951 में कैबिनेट से इस्तीफा दे दिया।

अतिरिक्त विवरण:

- उन्होंने बाद में बौद्ध धर्म को अपना लिया। 6 दिसंबर, 1956 को उनका निधन हो गया, जिसे महापरिनिर्वाण दिवस के रूप में मनाया जाता है।
  - चैत्य भूमि, मुंबई में डॉ. भीमराव अंबेडकर का स्मारक है।
- उन्हें वर्ष 1990 में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से भी सम्मानित किया गया था

महत्त्वपूर्ण कार्य:

- पत्रिकाएँ:
  - मूकनायक (1920)
  - बहिष्कृत भारत (1927)
  - समता (1929)
  - जनता (1930)
- पुस्तकें:
  - एनीहिलेशन ऑफ कास्ट
  - बुद्ध और कार्ल मार्क्स
  - द अनटचेबल: हू आर दे एंड व्हाय दे हैव बिकम अनटचेबल्स
  - बुद्ध एंड हिज़ धम्म
  - द राइज़ एंड फॉल ऑफ हिंदू वुमेन
- संगठन:
  - बहिष्कृत हितकारिणी सभा (1923)
  - इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी (1936)
  - अनुसूचित जाति संघ (1942)

भारत में प्रमुख जनजातीय विद्रोह

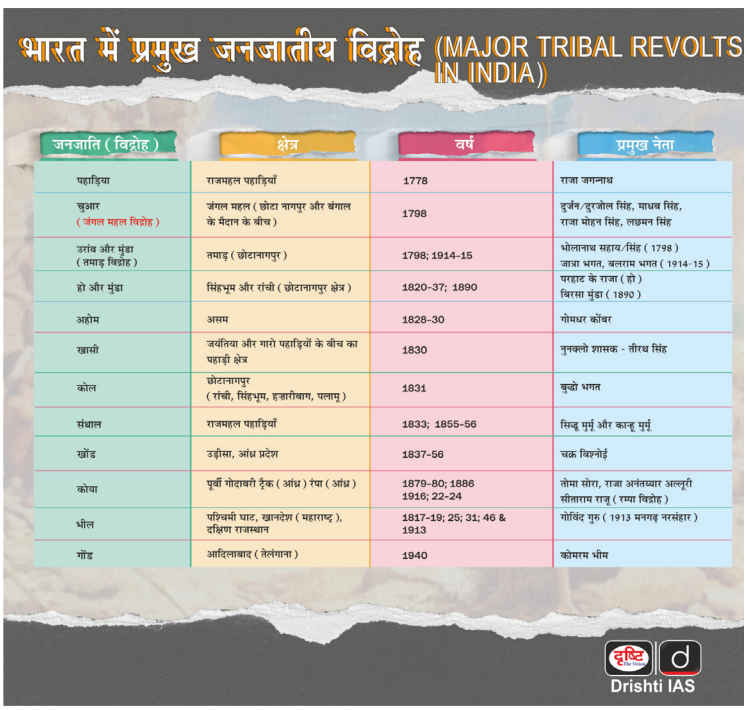

जनजाति (विद्रोह)	क्षेत्र	वर्ष	प्रमुख नेता
पहाड़िया	राजमहल पहाड़ियाँ	1778	राजा जगन्नाथ
चुआर (जंगल महल विद्रोह)	जंगल महल (छोटा नागपुर और बंगाल के मैदान के बीच)	1798	दुर्जन/दुरजोल सिंह, माधव सिंह, राजा मोहन सिंह, लछमन सिंह
उरांव और मुंडा (तमाड़ विद्रोह)	तमाड़ (छोटानागपुर)	1798; 1914-15	भोलानाथ सहाय/सिंह (1798) जात्रा भगत, बलराम भगत (1914-15)
हो और मुंडा	सिंहभूम और रांची (छोटानागपुर क्षेत्र)	1820-37; 1890	परहाट के राजा (हो) बिरसा मुंडा (1890)
अहोम	असम	1828-30	गोमधर कोंवर
खासी	जयंतिया और गारो पहाड़ियों के बीच का पहाड़ी क्षेत्र	1830	नुनक्लो शासक - तीरथ सिंह
कोल	छोटानागपुर (रांची, सिंहभूम, हज़ारीबाग, पलामू)	1831	बुद्धो भगत
संथाल	राजमहल पहाड़ियाँ	1833; 1855-56	सिद्धू मुर्मू और कान्हू मुर्मू
खोंड	उड़ीसा, आंध्र प्रदेश	1837-56	चक्र बिशोई
कोया	पूर्वी गोदावरी ट्रैक (आंध्र) रंपा (आंध्र)	1879-80; 1886 1916; 22-24	तोमा सोरा, राजा अर्नतय्यार अल्लूरी सीताराम राजू (रम्पा विद्रोह)
भील	पश्चिमी घाट, खानदेश (महाराष्ट्र), दक्षिण राजस्थान	1817-19; 25; 31; 46 & 1913	गोविंद गुरु (1913 मनगढ़ नरसंहार)
गोंड	आदिलाबाद (तेलंगाना)	1940	कोमरम भीम

राम प्रसाद बिस्मिल

11 जून, 2023 को राम प्रसाद बिस्मिल की 126वीं जयंती मनाई गई। अपने क्रांतिकारी विचारों और काव्य कौशल के लिये पहचाने जाने वाले बिस्मिल ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध लड़ाई में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बिस्मिल के बारे में प्रमुख बिंदु:

- **जन्म:**
  - बिस्मिल का जन्म 11 जून, 1897 को उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर ज़िले के एक गाँव में मुरलीधर और मूलमती के यहाँ हुआ था।
- **परिचय:**
  - बिस्मिल आर्य समाज (वर्ष 1875 में दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित) में शामिल हो गए और 'बिस्मिल' यानी 'घायल' या 'बेचैन' जैसे नामों का उपयोग करते हुए एक प्रतिभाशाली लेखक और कवि बन गए।
  - एक भारतीय राष्ट्रवादी और आर्यसमाजी धर्मप्रचारक भाई परमानंद को मौत की सज़ा के बारे में पढ़कर उनमें पहली बार देशभक्ति की भावना उत्पन्न हुई।
    - वह तब 18 वर्ष के थे और उन्होंने अपनी कविता 'मेरा जन्म' के माध्यम से अपनी पीड़ा व्यक्त की।
  - वह गांधीवादी तरीकों के विपरीत स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारी तरीकों में विश्वास करते थे ।
- **राम प्रसाद बिस्मिल का योगदान:**
  - मैनपुरी षड्यंत्र:
    - बिस्मिल का कॉन्ग्रेस पार्टी की उदारवादी विचारधारा से मोहभंग हो गया और उन्होंने 'मातृवेदी' नामक एक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की।
    - वे वर्ष 1918 के 'मैनपुरी षडयंत्र' में शामिल थे, जिसमें बिस्मिल और दीक्षित को सरकार द्वारा प्रतिबंधित पुस्तकें बेचते हुए पाया गया था।
  - 28 जनवरी, 1918 को बिस्मिल ने पैम्फलेट के रूप में अपने दो लेखों- देशवासियों के नाम संदेश (अ मैसेज टू कंट्रीमेन) और मैनपुरी की प्रतिज्ञा (वाउ ऑफ मैनपुरी) को आम लोगों में वितरित किया।
    - वर्ष 1918 में तीन मौकों पर उन्होंने अपनी पार्टी के लिये धन इकट्ठा करने हेतु सरकारी खजाने को लूटा।
  - हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की स्थापना:
    - वर्ष 1920 में उन्होंने सचिंद्र नाथ सान्याल और जादूगोपाल मुखर्जी के साथ हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) का गठन किया।
    - HRA का घोषणापत्र मुख्य रूप से बिस्मिल द्वारा लिखा गया, जिसका उद्देश्य सशस्त्र क्रांति के माध्यम से संयुक्त राज्य भारत के रूप में एक संघीय गणराज्य की स्थापना करना था।
  - काकोरी कांड:
    - वर्ष 1925 में काकोरी ट्रेन डकैती HRA की एक बड़ी कार्रवाई थी, जिसका उद्देश्य अपनी गतिविधियों और प्रचार हेतु धन प्राप्त करना था।
    - बिस्मिल और उनके साथी चंद्रशेखर आज़ाद एवं अशफाकउल्ला खान ने लखनऊ के पास काकोरी में ट्रेन लूटने का फैसला किया।
    - वे अपने प्रयास में सफल रहे हालाँकि घटना के एक महीने के भीतर एक दर्जन अन्य HRA सदस्यों के साथ गिरफ्तार कर लिये गए और उन पर काकोरी षडयंत्र केस के तहत मुकदमा चलाया गया।
    - यह कानूनी प्रक्रिया 18 महीने चली। बिस्मिल, लाहिड़ी, खान और ठाकुर रोशन सिंह को मौत की सज़ा दी गई।
  - कविता और लेखन:
    - हिंदी और उर्दू में देशभक्ति छंदों सहित बिस्मिल के विपुल लेखन ने भारतीयों को स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने हेतु प्रेरित किया।
    - उनकी कविताओं में सामाजिक मुद्दों और समानता तथा मानवीय गरिमा के सिद्धांतों के लिये सरोकार परिलक्षित होता है।
  - हिंदू-मुस्लिम एकता का समर्थन:
    - साथी क्रांतिकारी कवि अशफाकउल्ला खान के साथ बिस्मिल की घनिष्ठ मित्रता सांप्रदायिक सद्भाव का प्रतीक थी।
    - फाँसी से पहले अपने आखिरी पत्र में उन्होंने देश की सेवा के लिये हिंदुओं और मुसलमानों को एकजुट होने की आवश्यकता पर बल दिया।
- **मृत्यु:**
  - 19 दिसंबर, 1927 को गोरखपुर जेल में उन्हें फाँसी दे दी गई।
  - राप्ती नदी के तट पर उनका अंतिम संस्कार किया गया था और इस स्थल को बाद में राज घाट नाम दिया गया।

गांधीजी के सत्याग्रह का 130वाँ वर्ष

चर्चा में क्यों ?

भारतीय नौसेना ने महात्मा गांधी (7 जून 1893) द्वारा रंगभेद के विरुद्ध संघर्ष की शुरुआत के 130 वर्ष पूर्ण होने की स्मृति में 7 जून, 2023

को दक्षिण अफ्रीका के डरबन के पास पीटरमैरिट्ज़बर्ग रेलवे स्टेशन पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया।

- INS त्रिशूल, भारतीय नौसेना की अग्रिम पंक्ति के एक युद्धपोत को कार्यक्रम में भाग लेने के लिये डरबन भेजा गया है।
- यह यात्रा भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच राजनयिक संबंधों की पुनर्स्थापना के 30 वर्ष पूर्ण होने का भी स्मरण कराती है।

दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी का योगदान:

- **कानूनी और सामाजिक सक्रियता:**
  - गांधी 1893 में एक कानूनी मामले को संभालने के लिये दक्षिण अफ्रीका पहुँचे लेकिन देश में भारतीयों के अधिकारों हेतु लड़ने के लिये प्रेरित हुए।
  - उन्होंने डरबन में भारतीयों को संगठित किया और भारतीयों हेतु मतदान के अधिकार की वकालत करने के लिये 1894 में नेटाल इंडियन कॉन्ग्रेस की स्थापना की।
  - उन्होंने अपने कानूनी अभ्यास, भारतीयों का प्रतिनिधित्व करने और उनकी शिकायतों को दूर करने के माध्यम से भेदभाव तथा नस्लवाद का सामना किया।
  - उन्होंने भारतीयों के कल्याण के लिये समर्थन जुटाया और वर्ष 1903 में जोहान्सबर्ग में ट्रांसवाल ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन की स्थापना की।
- **सत्याग्रह और निष्क्रिय प्रतिरोध:**
  - गांधी ने अपना पहला सत्याग्रह (अहिंसक प्रतिरोध) अभियान 1906 में जोहान्सबर्ग में एशियाई लोगों पर प्रतिबंध लगाने वाले अध्यादेश के खिलाफ शुरू किया।
  - उन्होंने सामूहिक बैठकें आयोजित कीं और भेदभावपूर्ण कानूनों को चुनौती देने के लिये सविनय अवज्ञा को प्रोत्साहित किया।
  - वर्ष 1913 में प्रसिद्ध वोल्क्रस्ट सत्याग्रह सहित अपने अहिंसक विरोध के लिये गांधीजी को कई बार कारावास जाना पड़ा।
- **सामुदायिक जीवन की स्थापना:**
  - गांधी ने सामुदायिक जीवन के प्रयोग के तौर पर वर्ष 1904 में डरबन में फीनिक्स सेटलमेंट की स्थापना की।
  - उन्होंने सत्याग्रहियों (अहिंसा के अनुयायी) को तैयार करने के लिये वर्ष 1910 में जोहान्सबर्ग के पास टॉल्स्टॉय फार्म की स्थापना की।
  - इन पहलों का उद्देश्य आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना, सांप्रदायिक सद्भाव को प्रोत्साहित करना और व्यावहारिक कौशल विकास का प्रशिक्षण प्रदान करना था।
- **भारतीय समुदाय की भागीदारी:**
  - गांधी की सक्रियता और नेतृत्त्व ने भारतीय समुदाय को भेदभावपूर्ण कानूनों एवं विनियमों के खिलाफ खड़े होने के लिये प्रेरित किया।
  - अहिंसक प्रतिरोध और सविनय अवज्ञा के उनके तरीकों का वर्ष 1912 में गठित साउथ अफ्रीका नेटिव नेशनल कॉन्ग्रेस पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।
  - गांधी के राजनीतिक विचारों और भागीदारी के प्रयासों ने दक्षिण अफ्रीका के स्वतंत्रता आंदोलन के गठन एवं दिशा को आकार देने में अहम भूमिका निभाई।
- **कानूनी सुधार और भारतीय अधिकारों की मान्यता:**
  - अपनी सक्रियता और संवाद के माध्यम से गांधी ने वर्ष 1914 में दक्षिण अफ्रीकी सरकार को भारतीय राहत अधिनियम पारित करने के लिये मज़बूर कर दिया।
  - इस अधिनियम के कारण कई भेदभावपूर्ण कानून समाप्त हो गए और दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के अधिकारों को मान्यता दी गई।
  - गांधी के प्रयासों ने भविष्य के सुधारों की नींव रखी और उत्पीड़न के खिलाफ संघर्ष में अहिंसक प्रतिरोध के रूप में एक मिसाल कायम की।

पुराना किला का उत्खनन

दिल्ली स्थित पुराना किला में हाल ही में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI) द्वारा की गई उत्खनन कार्यवाही से 2,500 वर्षों से अधिक पुराने इतिहास का पता चला है। इस उत्खनन का उद्देश्य स्थल के पूर्ण कालक्रम को स्थापित करना है।

- यहाँ विभिन्न ऐतिहासिक काल की कलाकृतियों की खोज की गई है जिसमें पूर्व-मौर्य, मौर्य, सुंग, कुषाण, गुप्त, राजपूत, सल्तनत और मुगल सहित 9 सांस्कृतिक स्तरों का पता चला है।
- इस योजना का लक्ष्य कलाकृतियों को किले में एक ओपन एयर साइट संग्रहालय में प्रदर्शित करना है।

उत्खनन के निष्कर्ष:

- **चित्रित धूसर बर्तनों के टुकड़े:**
  - इन मृदभांडों (मिट्टी के बर्तनों) के टुकड़े आमतौर पर 1200 ईसा पूर्व से 600 ईसा पूर्व की अवधि के हैं, जो पूर्व मौर्य युग में मानव बस्तियों के अस्तित्व का संकेत देते हैं।
- **वैकुंठ विष्णु मूर्तिकला:**
  - खुदाई के दौरान राजपूत काल से संबंधित वैकुंठ विष्णु की 900 वर्ष पुरानी एक मूर्ति की खोज की गई।
- **टेराकोटा पट्टिका:**
  - इस स्थल पर देवी गजलक्ष्मी की एक टेराकोटा पट्टिका मिली है, जो गुप्त काल की है।
- **टेराकोटा रिंग वेल:**
  - मौर्य काल के 2,500 वर्ष पुराने कुएँ के अवशेषों का पता चला था।

➲ **शुंग-कुषाण काल का परिसर:**

- खुदाई में सुंग-कुशान काल के एक अच्छी तरह से परिभाषित फोर-रूम परिसर का पता चला, जो लगभग 2,300 वर्ष पुराना है।

➲ **सिक्के, मुहरें और ताँबे की कलाकृतियाँ:**

- साइट पर 136 से अधिक सिक्के, 35 मुहरें और सीलिंग तथा अन्य ताँबे की कलाकृतियों की खोज की गई। ये निष्कर्ष व्यापार गतिविधियों के केंद्र के रूप में साइट के महत्त्व को इंगित करते हैं।

पुराना किला:

➲ पुराना किला मुगल युग से संबंधित सबसे पुराने किलों में से एक है और इस स्थल की पहचान इंद्रप्रस्थ (पांडवों की राजधानी) की प्राचीन बस्ती के रूप में की जाती है।

➲ पुराना किला के विशाल प्रवेश द्वार और दीवारों का निर्माण हुमायूँ ने 16वीं शताब्दी में किया था तथा नई राजधानी दीनपनाह की नींव रखी गई थी।

➲ इस काम को शेरशाह सूरी ने आगे बढ़ाया, जिसने हुमायूँ को विस्थापित किया।

➲ किले के अंदर के प्रमुख आकर्षण शेरशाह सूरी की किला-ए-कुहना मस्जिद, शेर मंडल (एक मीनार जो पारंपरिक रूप से हुमायूँ की मृत्यु से संबंधित है), एक बावड़ी और व्यापक प्राचीर के अवशेष हैं इसमें तीन द्वार हैं।

➲ इंडो-इस्लामिक वास्तुकला की अनूठी विशेषताएँ जैसे- घोड़े की नाल के आकार के मेहराब, ब्रैकेटेड ओपनिंग्स, संगमरमर की जड़ाई, नक्काशी आदि संरचना में प्रमुख हैं।

- मस्जिद में एक शिलालेख है, जिसमें कहा गया है 'जब तक इस धरती पर लोग हैं तब तक इस भवन में बार-बार आना चाहिये और लोग इसमें खुश रहेंगे'।

रानी दुर्गावती

हाल ही में मध्य प्रदेश सरकार ने 16वीं शताब्दी की रानी दुर्गावती, जिन्होंने मुगलों से युद्ध लड़ा था, के जीवन और विरासत को याद करने के लिये रानी दुर्गावती गौरव यात्रा नामक छह दिवसीय रैली का शुभारंभ किया।

रानी दुर्गावती:

➲ **परिचय:**

- वर्ष 1524 में महोबा के चंदेल राजवंश (वर्तमान में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश की सीमा के पास) में जन्मी रानी दुर्गावती भारत की स्वाधीनता की प्रतीक थीं।
  - चंदेलों को 11वीं शताब्दी में प्रसिद्ध खजुराहो मंदिरों के निर्माण के लिये जाना जाता था।
- दुर्गावती का विवाह गोंड राजा संग्राम शाह के बेटे दलपत शाह से हुआ और वर्ष 1550 में पति की मृत्यु के बाद उन्होंने बड़ी बहादुरी और साहस के साथ गढ़-कटंगा राज्य पर शासन किया।
  - गढ़-कटंगा साम्राज्य में नर्मदा घाटी का क्षेत्र और उत्तरी मध्य प्रदेश के कुछ हिस्से शामिल थे।
  - गोंड जनजाति मध्य भारत की एक प्रमुख जनजाति है जो अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और दृढ़ता के लिये जानी जाती है।
- सरकार के अभिलेखों के अनुसार, रानी ने 16 वर्षों तक राजकीय कार्यभार संभाला।

➲ **गढ़-कटंगा पर मुगल आक्रमण:**

- गढ़-कटंगा की बहादुर रानी दुर्गावती ने 16वीं शताब्दी के मध्य में मुगल साम्राज्य के विस्तार का विरोध किया।
- रानी दुर्गावती ने अकबर के सेनापति आसफ खान और पड़ोसी मालवा के सुल्तान बाज बहादुर के विरुद्ध लड़ाई में मज़बूत नेतृत्व का प्रदर्शन किया। प्रारंभ में अपने राज्य पर आसफ खान के हमले के विरुद्ध लड़ाई में जीत हासिल की।
- हालाँकि बाद में मुगलों ने फिर से संगठित होकर उनकी सेना पर विजय प्राप्त कर ली, जबकि रानी दुर्गावती ने आत्मसमर्पण करने के बजाय अपने प्राण त्यागने का निर्णय लिया।

➲ **विरासत और पहचान:**

- एक देशभक्त शासक के रूप में प्रतिष्ठित वह भारत की स्वाधीनता की प्रतीक थीं।
- अकबर के दरबारी इतिहासकार अबुल फज़ल ने उन्हें सुंदरता, अनुग्रह, साहस और बहादुरी के संयोजन के रूप में वर्णित किया है।
- उन्हें बलिदान एवं संस्कृति के रक्षक के रूप में याद किया जाता है।

प्राचीन माया शहर की खोज

मैक्सिको में पुरातत्त्वविदों ने युकाटन प्रायद्वीप के घने जंगल में एक महत्त्वपूर्ण खोज की है, जिसमें एक प्राचीन माया शहर के अवशेष मिले हैं।

प्राचीन माया शहर से संबंधित प्रमुख खोजें:

➲ **परिचय:**

- मैक्सिको में राष्ट्रीय मानव विज्ञान एवं इतिहास संस्थान (National Institute for Anthropology and History- INAH) ने ओकोमटुन के अभियान का नेतृत्व किया।
  - अनुसंधान दल ने पूरे क्षेत्र में पूर्व-हिस्पैनिक संरचनाओं की पहचान करने के लिये हवाई लेज़र स्कैनिंग का उपयोग किया।
- इसे ओकोमटुन नाम दिया गया है, युकाटेक माया भाषा में जिसका अर्थ "पत्थर का स्तंभ" है, माना जाता है कि यह नया खोजा गया शहर 250 से 1000 ईस्वी के बीच युकाटन प्रायद्वीप के केंद्रीय तराई क्षेत्र में एक प्रमुख केंद्र रहा है।
- यह माया सभ्यता की उन्नत सामाजिक और धार्मिक प्रथाओं के बारे में अमूल्य अंतर्दृष्टि भी प्रदान करता है, जो अपने परिष्कृत गणितीय कैलेंडर के लिये जानी जाती है।

➲ **प्रमुख खोज:**

- ऊँचा भू-भाग: सबसे आश्चर्यजनक खोजों में से आर्द्रभूमि से घिरा एक ऊँचा भू-भाग था, जिससे वहाँ बसने के लिये चुने गए एक विशिष्ट और रणनीतिक स्थान के पैटर्न का पता चलता है।
- मृदभांड: इस स्थल पर पाए गए मिट्टी के बर्तनों के टुकड़ों से पता चलता है कि ओकोमटुन 600-900 ईस्वी के दौरान यहाँ बसते थे।

- केंद्रीय वेदियाँ: इन्हें ला रिगुएना नदी के पास खोजा गया था, संभवत: इनका उपयोग सामुदायिक अनुष्ठानों के लिये किया जाता था।
  - केंद्रीय वेदियों से सामुदायिक अनुष्ठानों की उपस्थिति का पता चलता है, यह माया सभ्यता के दौरान जीवन के आध्यात्मिक और सांप्रदायिक पहलुओं पर प्रकाश डालती हैं।
- प्री-हिस्पैनिक बॉल गेम्स: धार्मिक प्रथा का प्रतिनिधित्व करने वाला यह खेल पूरे माया क्षेत्र में खेला जाता था।
  - इस खेल में सूर्य के प्रतीक के रूप में रबर की गेंद को बिना हाथों का उपयोग किये पत्थर के घेरे से गुज़ारना शामिल था।
- शहर का पतन: संभवत: 800 से 1000 ईस्वी के बीच यहाँ महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए।
  - आबादी में गिरावट, शहरी केंद्र और राजनीतिक अस्थिरता इस अवधि की प्रमुख विशेषताएँ है, यही अवधि निम्न क्षेत्रीय माया शहर के पतन का समय मानी जाती है।
  - ओकोमटुन (Ocomtún) और अन्य माया शहरों का पतन एक बड़े क्षेत्रीय पतन का हिस्सा थे जो माया सभ्यता के इतिहास में एक परिवर्तनकारी अवधि को दर्शाता है।

माया सभ्यता:

- माया सभ्यता के लोग मैक्सिको और मध्य अमेरिका के मूल निवासी हैं। युकाटन (Yucatán) में उत्पन्न होकर वे 250 ईस्वी के आसपास वर्तमान में दक्षिणी मैक्सिको, ग्वाटेमाला, उत्तरी बेलीज़ और पश्चिमी होंडुरास में प्रमुखता से उभरे थे।
- माया सभ्यता का उदय लगभग 250 ईस्वी में शुरू हुआ था। पुरातत्त्वविद् माया संस्कृति को शास्त्रीय काल के रूप में जानते हैं जो लगभग 900 ईस्वी तक चली थी।
- माया सभ्यता सबसे उन्नत और प्रभावशाली संस्कृतियों में से एक थी।
  - उन्होंने लेखन, खगोल विज्ञान, गणित, कला, वास्तुकला और धर्म की जटिल प्रणालियाँ विकसित की थीं।
  - उन्होंने पिरामिडों, महलों, मंदिरों और चौक (प्लाज़ा) वाले प्रभावशाली शहर भी बनाए। हालाँकि उनके इतिहास एवं संस्कृति के अनेक पहलू रहस्यमय और अज्ञात बने हुए हैं।

अन्य प्रमुख प्राचीन सभ्यताएँ:

- सिंधु घाटी सभ्यता- पाकिस्तान से उत्तर-पूर्व अफगानिस्तान और उत्तर-पश्चिम भारत
- मेसोपोटामिया सभ्यता- इराक, सीरिया और तुर्किये
- इंकान सभ्यता- इक्वाडोर, पेरू और चिली
- एज़्टेक सभ्यता- मैक्सिको
- फारसी सभ्यता- ईरान
- प्राचीन यूनानी सभ्यता- ग्रीस
- प्राचीन मिस्र की सभ्यता- मिस्र

आंध्र प्रदेश में मध्यपाषाणकालीन शैलचित्रों की खोज

हाल ही में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI) के एक पूर्व पुरातत्त्वविद् ने मध्यपाषाणकालीन शैलचित्रों की खोज की है जिसमें आंध्र प्रदेश के गुंटूर ज़िले में ज़मीन के एक हिस्से को जोतते हुए एक व्यक्ति को दर्शाया गया है।

- यह तीर्थस्थलों की स्थापत्य विशेषताओं का पता लगाने के लिये कृष्णा नदी की निचली घाटी के सर्वेक्षण के दौरान पाई गई।
- इससे पहले वर्ष 2018 में पुरातत्त्वविदों ने गुंटूर ज़िले के दचेपल्ली में प्राकृतिक चूना पत्थर संरचनाओं पर लगभग 1500-2000 ईसा पूर्व नवपाषाण युग के अनुमानित प्रागैतिहासिक शैलचित्रों की खोज की थी।

मुख्य निष्कर्ष:

- **प्राकृतिक शैलाश्रय:**
  - ओर्वाकल में एक पहाड़ी पर प्राकृतिक रूप से बनी गुफाओं की दीवारों और छत पर शैलचित्र पाए गए हैं।
  - ये गुफाएँ प्रागैतिहासिक काल के दौरान उन मनुष्यों के लिये आश्रय स्थल के रूप में कार्य करती थीं जो उस समय इस क्षेत्र में रहते थे।

- **मध्यपाषाणकालीन शैलचित्र:**
  - खोजी गई पाँच गुफाओं में से दो में शैलचित्रों का विशिष्ट चित्रण है।
  - मध्यपाषाणकालीन युग के लोगों द्वारा निष्पादित यह चित्रकला उस युग की कलात्मक क्षमताओं और प्रथाओं की झलक को दर्शाती है।
- **कलात्मक सामग्री:**
  - शैल चित्र प्राकृतिक सफेद काओलिन और लाल गेरू रंग का उपयोग करके बनाए गए थे।
    - 'गेरू' मिट्टी, रेत और फेरिक ऑक्साइड से बना एक रंगद्रव्य है।
    - काओलिनाइट एक नरम, मिट्टी जैसा और आमतौर पर सफेद खनिज है जो फेल्डस्पार जैसे एल्युमीनियम सिलिकेट खनिजों के रासायनिक अपक्षय द्वारा उत्पादित होता है।
  - समय के साथ हवा और हवा के संपर्क में आने से चित्रों को काफी नुकसान हुआ है। हालाँकि कुछ रेखाचित्र और रूपरेखाएँ बरकरार हैं।
- **चित्रित दृश्य:**
  - शैलचित्र प्रागैतिहासिक काल के समुदायों के दैनिक जीवन के विभिन्न दृश्यों को दर्शाते हैं।
  - पेंटिंग में एक आदमी को अपने बाएँ हाथ से एक जंगली बकरी को कुशलता से पकड़ते हुए और उसे नियंत्रित करने के लिये हुक जैसे उपकरण का उपयोग करते हुए चित्रित किया गया है।
  - एक अन्य पेंटिंग में दो जोड़ों को हाथ उठाए हुए दिखाया गया है, जबकि एक बच्चा उनके पीछे खड़ा है, जो संभवत: सांप्रदायिक गतिविधियों या अनुष्ठानों का संकेत दे रहा है।
- **कृषि पद्धतियाँ:**
  - एक महत्त्वपूर्ण पेंटिंग में एक आदमी को हल पकड़े हुए और ज़मीन जोतते हुए दिखाया गया है। यह चित्रण एक अर्द्ध-व्यवस्थित जीवन पद्धति का सुझाव देता है जहाँ समुदाय के सदस्य जानवरों को पालतू बनाने तथा फसलों की खेती करने में लगे हुए हैं, जो प्रारंभिक कृषि पद्धतियों को दर्शाते हैं।

पाषाण युग:

- **पुरापाषाण युग:**
  - मुख्यत: यह एक शिकारी प्रवृत्ति की और खाद्य संचय करने वाली संस्कृति मानी जाती है।
  - पुरापाषाणकालीन उपकरणों में धारदार पत्थर, चॉपर, हाथ की कुल्हाड़ी, खुरचनी, भाला, धनुष और तीर आदि शामिल हैं तथा ये आमतौर पर कठोर क्वार्टजाइट चट्टान से बने होते थे।
  - मध्य प्रदेश के भीमबेटका में पाए गए शैलचित्र और नक्काशी से पता चलता है कि इस काल में शिकार एक मुख्य जीवन निर्वाह गतिविधि थी।
  - भारत में पुरापाषाण काल को तीन चरणों में विभाजित किया गया है:
    - प्रारंभिक पुरापाषाण काल (500,000-100,000 ईसा पूर्व)
    - मध्य पुरापाषाण काल (100,000-40,000 ईसा पूर्व)
    - उत्तर पुरापाषाण काल (40,000-10,000 ईसा पूर्व)
- **मेसोलिथिक (मध्य पाषाण) युग (10,000 ईसा पूर्व-8000 ईसा पूर्व):**
  - प्लेइस्टोसीन काल से होलोसीन काल तक संक्रमण और जलवायु में अनुकूल परिवर्तन इस युग की प्रमुख विशेषता है।
  - मध्यपाषाण युग का प्रारंभिक काल शिकार, मछली पकड़ने और भोजन एकत्र करने का प्रतीक है।
  - पशुओं को पालतू बनाने का कार्य इसी युग में प्रारंभहुआ।
  - माइक्रोलिथ्स नामक उपकरण/औज़ार आकर में छोटे थे परंतु पुरापाषाण युग की तुलना में वे ज्यामितिक रूप से परिष्कृत थे।
- **निओलिथिक (नव पाषाण) युग (8000 ईसा पूर्व-1000 ईसा पूर्व):**
  - इसे पाषाण युग का अंतिम चरण माना जाता, इस युग से खाद्य उत्पादन की शुरुआत हुई।
  - लंबे समय तक एक ही स्थान पर रहना, मिट्टी के बर्तनों का उपयोग और शिल्प का आविष्कार नवपाषाण युग की विशेषता है।
  - नवपाषाण काल के लोग पॉलिशदार पत्थर के औज़ारों एवं हथियारों का प्रयोग करते थे। इस काल के लोग विशेष रूप से पत्थर से बनी कुल्हाड़ियों का प्रयोग करते थे। नवपाषाण काल में हथौड़ा, छेनी एवं बसुली के प्रमाण भी प्राप्त हुए हैं।
- **मेगालिथिक (महापाषाण) संस्कृति:**
  - महापाषाण संस्कृति में पत्थर की संरचनाओं के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं, जिनका निर्माण दफन स्थलों के रूप में या स्मारक स्थलों के रूप में किया गया था।
  - भारत में पुरातत्त्वविदों को लौह युग (1500 ईसा पूर्व से 500 ईसा पूर्व) में अधिकांश महापाषाण संस्कृतियों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं, हालाँकि कुछ साक्ष्यों से लौह युग पूर्व (2000 ईसा पूर्व) भी इनकी उपस्थिति के प्रमाण मिलते हैं।
  - महापाषाण संस्कृति संपूर्ण प्राचीन भारतीय उपमहाद्वीप में फैली हुई है। हालाँकि उनमें से अधिकांश स्थल प्रायद्वीपीय भारत में पाए जाते हैं, जो महाराष्ट्र (मुख्य रूप से विदर्भ), कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना राज्यों में केंद्रित हैं।

बाल गंगाधर तिलक

(23 जुलाई 1856 - 1 अगस्त 1920)

पूर्ण स्वतंत्रता या स्वराज्य के सबसे शुरुआती व सबसे मुखर समर्थकों में से एक

संक्षिप्त विवरण

- इन्हें लोकमान्य तिलक के नाम से भी जाना जाता है
- महात्मा गांधी ने उन्हें "आधुनिक भारत का निर्माता" कहा था
- शिक्षाविद: एक विपुल लेखक और पत्रकार
- संबंधित संस्थान: डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी (1884) और फर्ग्यूसन कॉलेज (1885)

सामाजिक और राजनीतिक योगदान

- विचारधारा: एक धर्मनिष्ठ हिंदू; लोगों को जागृत करने के लिये हिंदू धर्मग्रंथों का उपयोग किया
- कॉन्ग्रेस में भूमिका: 1890 में शामिल हुए; सूरत विभाजन (1907) में महत्वपूर्ण भूमिका - उग्रवादी सूरत अधिवेशन की अध्यक्षता करना चाहते थे
- नारा: "स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, और मैं इसे लेकर रहूँगा!"
- लाल-बाल-पाल तिकड़ी: लाला लाजपत राय और बिपिन चंद्र पाल के साथ इन्होंने उग्रवादी समूह का नेतृत्त्व किया

स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान

- स्वदेशी आन्दोलन का प्रचार किया
- एनी बेसेंट के साथ भारतीय होम रूल आंदोलन का नेतृत्व किया
- अप्रैल 1916 में अखिल भारतीय होम रूल लीग की स्थापना की

लखनऊ समझौता (1916) - राष्ट्रवादी संघर्ष में हिंदू-मुस्लिम एकता के लिये तिलक की नेतृत्व वाली कॉन्ग्रेस और जिन्ना की अध्यक्षता वाली अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के बीच हस्ताक्षरित

साहित्यिक कार्य

- समाचार पत्र: "केसरी" (मराठी) और "द मराठा" (अंग्रेज़ी)
- पुस्तकें: गीता रहस्य (उनकी प्रसिद्ध रचना) और द आर्कटिक होम ऑफ द वेदाज़

दृष्टि The Vision | d Drishti IAS

अल्लूरी सीताराम राजू

चर्चा में क्यों ?

प्रधानमंत्री ने 4 जुलाई, 2022 को अल्लूरी सीतारमण राजू की 125वीं जयंती के उपलक्ष्य में आंध्र प्रदेश में उनकी एक कांस्य प्रतिमा का अनावरण किया।

- आज़ादी का अमृत महोत्सव के हिस्से के रूप में सरकार स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान को उचित मान्यता देने और देश भर के लोगों को उनके बारे में जागरूक करने के लिये प्रतिबद्ध है।

अल्लूरी सीताराम राजू :

- **परिचय:**
  - वह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल एक भारतीय क्रांतिकारी थे।

- उनका जन्म वर्तमान आंध्र प्रदेश में वर्ष 1897 (कुछ स्रोतों में वर्ष 1898) में हुआ था।
- वह 18 वर्ष की आयु में एक संन्यासी बन गए और उन्होंने अपनी तपस्या, ज्योतिष तथा चिकित्सा के ज्ञान एवं जंगली जानवरों को वश में करने की अपनी क्षमता के कारण पहाड़ी व आदिवासी लोगों के बीच एक रहस्यमय आभा प्राप्त की।

स्वतंत्रता आंदोलन:

- बहुत कम उम्र में राजू ने गंजम, विशाखापत्तनम और गोदावरी में पहाड़ी लोगों के असंतोष को अंग्रेज़ो के खिलाफ अत्यधिक प्रभावी गुरिल्ला प्रतिरोध में बदल दिया।
  - गुरिल्ला युद्ध अनियमित युद्ध का एक रूप है जिसमें लड़ाकों के छोटे समूह एक बड़ी और कम-गतिशील पारंपरिक सेना से लड़ने के लिये घात, तोड़फोड़, छापे, छोटे युद्ध, हिट-एंड-रन रणनीति एवं गतिशीलता सहित सैन्य रणनीति शामिल है।
- औपनिवेशिक शासन ने आदिवासियों की पारंपरिक पोडु (स्थानांतरित) खेती को खतरे में डाल दिया, क्योंकि सरकार ने वन भूमि को सुरक्षित करने की मांग की थी।
- वर्तमान आंध्र प्रदेश में जन्मे सीताराम राजू वर्ष 1882 के मद्रास वन अधिनियम के खिलाफ ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों में शामिल हो गए। इस अधिनियम ने आदिवासियों (आदिवासी समुदायों) के उनके वन आवासों में मुक्त आवाजाही तथा उनके पारंपरिक रूप पोडु (स्थानांतरित खेती झूम कृषि) को प्रतिबंधित कर दिया।
- अंग्रेज़ो के प्रति बढ़ते असंतोष ने 1922 के रम्पा विद्रोह/मन्यम विद्रोह को जन्म दिया, जिसमें अल्लूरी सीताराम राजू ने एक नेतृत्वकर्त्ता के रूप में प्रमुख भूमिका निभाई।
  - रम्पा विद्रोह महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन के साथ हुआ। उन्होंने लोगों को खादी पहनने और शराब छोड़ने के लिये सहमत किया।
  - लेकिन साथ ही उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि भारत केवल बल के प्रयोग से ही आज़ाद हो सकता है अहिंसा से नहीं।
- स्थानीय ग्रामीणों द्वारा उनके वीरतापूर्ण कारनामों के लिये उन्हें "मन्यम वीरुडु" (जंगल का नायक) उपनाम दिया गया था।
- वर्ष 1924 में अल्लूरी सीताराम राजू को पुलिस हिरासत में ले लिया गया, एक पेड़ से बाँध कर सार्वजनिक रूप से गोली मार दी गई तथा सशस्त्र विद्रोह को प्रभावी ढंग से समाप्त कर दिया।

लाल किला: भारत का स्वतंत्रता दिवस समारोह स्थल

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में भारत ने अपना 77वाँ स्वतंत्रता दिवस मनाया, एक बार फिर सुर्खियों का केंद्र दिल्ली का प्रतिष्ठित लाल किला था। यह ऐतिहासिक स्मारक, सदियों की कहानियों और संघर्षों से परिपूर्ण रही है।

लाल किले से जुड़ी घटनाओं की शृंखला:

लाल किला का ऐतिहासिक महत्त्व:

- दिल्ली सल्तनत के अंतर्गत: दिल्ली सल्तनत (वर्ष 1206-1506) के दौरान दिल्ली एक निर्णायक राजधानी के रूप में उभरी।
  - मुगल वंश के संस्थापक बाबर ने 16वीं शताब्दी में दिल्ली को 'पूरे हिंदुस्तान की राजधानी' कहा था।
  - स्थानांतरण (अकबर ने अपनी राजधानी आगरा स्थानांतरित कर दी) के बावजूद, शाहजहाँ के शासनकाल में मुगलों ने वर्ष 1648 में शाहजहानाबाद के साथ दिल्ली को अपनी राजधानी के रूप में पुनर्स्थापित किया, जिसे आज पुरानी दिल्ली के नाम से जाना जाता है।
- शाहजहाँ ने लाल-किले की नींव रखी थी।
- मुगल सम्राट का प्रतीकात्मक महत्त्व: 18वीं सदी तक मुगल सम्राट अपने अधिकांश क्षेत्र और शक्तियाँ खो चुके थे।
  - समाज के कुछ वर्गों द्वारा उन्हें अभी भी भारत के प्रतीकात्मक शासकों के रूप में माना जाता था, विशेषकर उन लोगों द्वारा जो ब्रिटिश उपनिवेशवाद (British Colonialism) का विरोध करते थे।
- 1857 का विद्रोह इस संबंध का प्रतीक था, जब लोगों ने लाल किले की ओर मार्च किया और वृद्ध बहादुर ज़फर को अपना नेता घोषित किया।

ब्रिटिश शाही शासन और लाल किले का परिवर्तन:

- दिल्ली पर ब्रिटिश कब्ज़ा: 1857 के विद्रोह में विजय ने के बाद, अंग्रेज़ों का इरादा शाहजहानाबाद को ध्वस्त करके मुगल विरासत को मिटाने का था।
  - लाल किले को छोड़ते हुए, उन्होंने इसकी भव्यता छीन ली, कलाकृतियाँ लूट लीं और आंतरिक संरचनाओं को ब्रिटिश इमारतों से बदल दिया।
  - इस परिवर्तन ने लाल किले पर ब्रिटिश शाही अधिकार की अमिट छाप छोड़ी।
- प्रतीकात्मक अधिकार का उपयोग: अंग्रेज़ों ने दिल्ली की प्रतीकात्मक शक्ति को पहचाना।
  - दिल्ली दरबार समारोहों ने ब्रिटिश प्रभुत्व को मज़बूत किया और वहाँ के सम्राट को भारत का सम्राट घोषित किया।

- वर्ष 1911 में, अंग्रेज़ों ने अपनी राजधानी को दिल्ली में स्थानांतरित कर दिया तथा एक नए शहर का निर्माण किया जो भारतीय लोकाचार और केंद्रीकृत प्राधिकरण का प्रतीक था।

लाल किला बना भारत के स्वतंत्रता दिवस समारोह का स्थल:

- 1940 के दशक में लाल किले पर भारतीय राष्ट्रीय सेना के परीक्षणों ने इसके प्रतीकवाद को बढ़ाया। इन परीक्षणों ने INA के प्रति सहानुभूति जगाई और ब्रिटिश शासन के खिलाफ राष्ट्रवादी भावनाओं को तीव्र किया, जिससे ब्रिटिश सरकार की अवज्ञा के प्रतीक के रूप में लाल किले की भूमिका मज़बूत हुई।
- जैसे ही भारत आज़ादी के करीब पहुँचा, भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने लाल किले पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने का फैसला किया।
  - 15 अगस्त, 1947 को, जवाहरलाल नेहरू ने प्रिंसेस पार्क में राष्ट्रीय ध्वज "तिरंगा" फहराया, जिसके बाद 16 अगस्त, 1947 को लाल किले में उनका ऐतिहासिक "ट्रिस्ट विद डेस्टिनी" भाषण हुआ।
  - यह ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से किले को पुन: प्राप्त करने और भारत की संप्रभुता एवं पहचान पर ज़ोर देने का एक प्रतीकात्मक संकेत था। इसने स्वतंत्रता के लिये भारत के लंबे और कठिन संघर्ष की परिणति को भी चिह्नित किया।
- तब से, हर साल 15 अगस्त को भारत के प्रधानमंत्री राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं और लाल किले से राष्ट्र को संबोधित करते हैं।
  - यह परंपरा भारत के स्वतंत्रता दिवस समारोह का एक अभिन्न अंग बन गई है और इसके गौरव एवं और देशभक्ति को दर्शाती है।

लाल किले के बारे में:

- लाल किला, जिसे इसमें बड़े पैमाने पर प्रयोग किये गए पत्थर के लाल रंग के कारण कहा जाता है, योजना में अष्टकोणीय है, जिसमें पूर्व और पश्चिम में दो लंबी भुजाएँ हैं।
- यह किला मुगल वास्तुकला की उत्कृष्ट कृति है और उनकी सांस्कृतिक एवं कलात्मक उपलब्धियों का प्रतीक है। इसे 2007 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल (UNESCO World Heritage Site) के रूप में नामित किया गया था।
  - साथ ही 500 रुपये के नए नोट के पीछे किले को दर्शाया गया है।
- इसका प्रबंधन वर्तमान में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण द्वारा किया जाता है, जो इसके संरक्षण और रखरखाव के लिये ज़िम्मेदार है।
  - ASI ने आगंतुकों के लिये संग्रहालय, गैलरी, ऑडियो गाइड, लाइट एंड साउंड शो आदि की भी स्थापना की है।

भारत का समुद्री इतिहास

चर्चा में क्यों ?

जहाज़ निर्माण की प्राचीन सिलाई वाली विधि (टंकाई विधि) के उपयोग से निर्मित 21 मीटर लंबा जहाज़ नवंबर 2025 में ओडिशा से इंडोनेशिया के बाली तक की यात्रा के लिये रवाना होगा।

- भारतीय नौसेना के एक दल द्वारा संचालित, यह परियोजना न केवल भारत की समुद्री परंपरा को प्रदर्शित करती है बल्कि भारत के समुद्री इतिहास पर भी प्रकाश डालती है।
- यह पहल संस्कृति मंत्रालय के प्रोजेक्ट मौसम के साथ संरेखित है, जिसका उद्देश्य समुद्री सांस्कृतिक संबंधों को पुन:स्थापित करना और हिंद महासागर की सीमा से लगे 39 देशों के बीच सांस्कृतिक साझेदारी को बढ़ावा देना है।

भारत के समुद्री व्यापार का इतिहास:

- **समुद्री व्यापार के प्रारंभिक साक्ष्य:**
  - सिंधु घाटी और मेसोपोटामिया: लगभग 3300-1300 ईसा पूर्व में प्रारंभिक काल के दौरान भारतीय उपमहाद्वीप के व्यक्तियों द्वारा समुद्री व्यापार करने का साक्ष्य पाया गया है।
    - लोथल (वर्तमान गुजरात में) में पाया गया डॉकयार्ड ज्वार और हवाओं की कार्यप्रणाली के विषय में इस सभ्यता की गहन समझ को दर्शाता है।
  - वैदिक और बौद्ध धर्म संबंधी संदर्भ: 1500-500 ईसा पूर्व के बीच रचित वेदों में समुद्री यात्रा की अनेकों कहानियाँ वर्णित हैं।
    - इसके अतिरिक्त, जातक कथाएँ और तमिल संगम साहित्य, 300 ईसा पूर्व से लेकर 400 ईस्वी तक विस्तृत प्राचीन भारतीय समुद्री गतिविधियों के विषय में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।
- **समुद्री गतिविधि की गहनता:** पहली शताब्दी ईसा पूर्व तक समुद्र के माध्यम से आवागमन तीव्र हो गया, जो आंशिक रूप से विश्व के पूर्वी भाग की वस्तुओं के लिये रोमन साम्राज्य की मांग से प्रेरित था।
  - लंबी यात्राओं को पूरा करने के लिये मानसूनी पवनों की शक्ति का प्रयोग महत्त्वपूर्ण हो गया और रोमन वाणिज्य ने ऐसी समुद्री यात्राओं को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
  - रोमनों ने कोरोमंडल तट से घोड़े, मोती और मसाले जैसे उत्पाद प्राप्त किये।
- **विविध नाव-निर्माण परंपराएँ:** प्राचीन भारतीय नाव-निर्माण परंपराएँ विविध थीं और इसमें अरब सागर की कॉयर-सिलाई

परंपरा, दक्षिण पूर्व एशिया की जोंग परंपरा एवं आउटरिगर नावों की ऑस्ट्रोनेशियन परंपरा शामिल थी।.

- इन परंपराओं में प्राय: निर्माण के लिये नावों में कीलें लगाने के बजाय उनकी सिलाई की जाती थी।
- जहाज़ निर्माण के लिये विभिन्न प्रकार की लकड़ी का प्रयोग किया जाता था, जिसमें मैंग्रोव की लकड़ी डॉवेल के लिये और सागौन की लकड़ी तख्तों, कीलों एवं स्टर्न पोस्ट के लिये आदर्श होती थी।
  - इन लकड़ी के प्रयोग के साक्ष्य हिंद महासागर के तटीय समुदायों और पुरातात्त्विक स्थलों पर पाए जा सकते हैं।

व्यापार के केंद्र के रूप में भारत: सामान्य युग तक हिंद महासागर एक जीवंत "ट्रेड लेक (व्यापार झील)" बन गया था, जिसके केंद्र में भारत था:

- पश्चिमी व्यापार मार्ग: भारत मध्य पूर्व और अफ्रीका के माध्यम से यूरोप से जुड़ा हुआ है, जिसमें भरूच और मुज़िरिस जैसे बंदरगाह महत्त्वपूर्ण व्यापार केंद्र के रूप में कार्यरत हैं।
- पूर्वी व्यापार मार्ग: चीन के हेपू में तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के भारतीय कलाकृतियों के साक्ष्य, भारत को चीन और मलेशिया से जोड़ने वाले एक समुद्री मार्ग का संकेत देते हैं।
  - बंगाल में ताम्रलिप्ति ने इस व्यापार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- इन समुद्री नेटवर्कों ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देते हुए विभिन्न पृष्ठभूमि के व्यक्तियों की आवाजाही को सुविधाजनक बनाया।
  - मिस्र में बेरेनिके तक भारतीय मूल की कलाकृतियाँ खोजी गई हैं, जिनमें हिंदू देवताओं के चित्र और संस्कृत में शिलालेख भी शामिल हैं।

भारत में समुद्री परिवहन की वर्तमान स्थिति

- भारत विश्व का 16वाँ सबसे बड़ा समुद्री देश है। वर्तमान में, भारत में समुद्री परिवहन मात्रा के हिसाब से 95% और मूल्य के हिसाब से 68% व्यापार संभालता है।
  - भारत विश्व के शीर्ष 5 जहाज़ रीसाइक्लिंग देशों में से एक है और वैश्विक जहाज़ रीसाइक्लिंग बाज़ार में 30% की हिस्सेदारी रखता है।
  - भारत जहाज़ तोड़ने वाले उद्योग में 30% से अधिक वैश्विक बाज़ार हिस्सेदारी का मालिक है और अलंग, गुजरात में विश्व की सबसे बड़ी जहाज़ तोड़ने वाली सुविधा का स्थान है।
- दिसंबर 2021 तक, भारत के पास 13,011 हजार के सकल टन भार (GT) के बेड़े की ताकत थी। हालाँकि, क्षमता के मामले में भारतीय बेड़ा विश्व के बेड़े का सिर्फ 1.2% है और भारत के

EXIM व्यापार (आर्थिक सर्वेक्षण 2021-2022) का केवल 7.8% (2018-19 के लिये) वहन करता है।

- वर्ष 2017 में, सरकार ने बंदरगाह-आधारित विकास और रसद-गहन उद्योगों के विकास की दृष्टि से महत्त्वाकांक्षी सागर माला कार्यक्रम शुरू किया।
  - भारत में वर्तमान में 12 प्रमुख और 200 गैर-प्रमुख/मध्यवर्ती बंदरगाह (राज्य सरकार प्रशासन के तहत) हैं।
  - जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट भारत का सबसे बड़ा प्रमुख बंदरगाह है, जबकि मुंद्रा सबसे बड़ा निजी बंदरगाह है।
- मैरीटाइम इंडिया विज़न 2030 ने भारतीय समुद्री क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिये 150 से अधिक पहलों की पहचान की है।

छत्रपति शिवाजी महाराज का वाघ नख

चर्चा में क्यों ?

महाराष्ट्र के सांस्कृतिक कार्य मंत्रालय ने छत्रपति शिवाजी महाराज के अस्त्र "वाघ नख" को राज्य में वापस लाने के लिये लंदन के विक्टोरिया और अल्बर्ट संग्रहालय के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये हैं।

- इस समझौता ज्ञापन के अनुसार, प्राचीन हथियार को तीन वर्ष की अवधि के लिये ऋणात्मक आधार पर महाराष्ट्र सरकार को सौंपा जाएगा, उक्त अवधि के दौरान इसे राज्य भर के संग्रहालयों में प्रदर्शित किया जाएगा।

वाघ नख:

- 'वाघ नख', जिसका शाब्दिक अर्थ है 'बाघ का पंजा', एक विशिष्ट मध्यकालीन खंजर है जिसका उपयोग भारतीय उपमहाद्वीप में किया जाता है।
  - इस घातक हथियार में एक दस्ताने और एक छड़ से जुड़े चार अथवा पाँच घुमावदार ब्लेड होते हैं, जिसे व्यक्तिगत सुरक्षा अथवा गुप्त तरीके से हमला करने के लिये डिज़ाइन किया गया था।
  - इसके नुकीले ब्लेड काफी तेज़ थे।
- **छत्रपति शिवाजी द्वारा 'वाघ नख' का उपयोग:**
  - कोंकण क्षेत्र में शिवाजी की मज़बूत पकड़ व अभियानों को कमज़ोर करने के लिये नियुक्त किये गए बीजापुर के सेनापति अफज़ल खान और छत्रपति शिवाजी के बीच मुठभेड़ हुई थी। अफज़ल खान ने शांतिपूर्ण सुलह का सुझाव दिया था किंतु संभावित खतरे की आशंका को देखते हुए शिवाजी पूरी तैयारी के साथ आए थे।
    - उन्होंने 'वाघ नख' को छुपाए रखा था और अपनी पोशाक के नीचे चेनमेल (छोटे धातु के छल्ले से बना कवच) पहन रखा था। आपसी संघर्ष में शिवाजी ने अफज़ल खान पर 'वाघ नख' से हमला किया जिसके परिणामस्वरूप खान की मृत्यु हो गई, अंततः शिवाजी की जीत हुई।

छत्रपति शिवाजी महाराज से संबंधित प्रमुख बिंदु:

- **जन्म:**
  - उनका जन्म 19 फरवरी, 1630 को महाराष्ट्र के पुणे ज़िले के शिवनेरी किले में हुआ था, वह बीजापुर सल्तनत के तहत पुणे और सुपे की जागीरदारी रखने वाले मराठा सेनापति शाहजी भोंसले तथा एक धार्मिक महिला जीजाबाई के पुत्र थे, जिनका शिवाजी के जीवन पर काफी प्रभाव पड़ा।
- **उपाधियाँ:**
  - उनके द्वारा छत्रपति, शाककार्ता, क्षत्रिय कुलवंत तथा हैंदव धर्मोधारक की उपाधियाँ धारण की गई।
- **शिवाजी के अधीन प्रशासन:**
  - केंद्रीय प्रशासन:
    - उन्होंने आठ मंत्रियों की एक परिषद (अष्टप्रधान) के साथ एक केंद्रीकृत प्रशासन की स्थापना की, जो प्रत्यक्ष रूप से उनके प्रति ज़िम्मेदार थे और राज्य के विभिन्न मामलों पर उन्हें सलाह देते थे।
    - पेशवा, जिसे मुख्य प्रधान के रूप में भी जाना जाता है, मूल रूप से राजा शिवाजी की सलाहकार परिषद का नेतृत्व करता था।
  - प्रांतीय प्रशासन:
    - शिवाजी ने अपने राज्य को चार प्रांतों में विभाजित किया। प्रत्येक प्रांत को ज़िलों और ग्राम में विभाजित किया गया था। प्रशासन की मूल इकाई ग्राम थी तथा यह ग्राम पंचायत की मदद से देशपांडे द्वारा शासित था।
    - केंद्र की भांति ,आठ मंत्रियों की एक समिति अथवा परिषद होती थी। जिसमें सर-ए- 'कारकुन' अथवा 'प्रांतपति' (प्रांत का प्रमुख) होता था।

महत्त्वपूर्ण युद्ध:

प्रतापगढ़ का युद्ध, 1659	▪ यह युद्ध मराठा राजा छत्रपति शिवाजी महाराज और आदिलशाही सेनापति अफ़ज़ल खान की सेनाओं के बीच महाराष्ट्र के सतारा शहर के पास प्रतापगढ़ के किले में लड़ा गया था।
पवन खिंड का युद्ध, 1660	▪ यह युद्ध मराठा सरदार बाजी प्रभु देशपांडे और आदिलशाही के सिद्दी मसूद के बीच महाराष्ट्र के कोल्हापुर शहर के पास (विशालगढ़ किले के आसपास) एक पहाड़ी दर्रे पर लड़ा गया।
सूरत का युद्ध, 1664	▪ यह युद्ध गुजरात के सूरत शहर के पास छत्रपति शिवाजी महाराज और मुगल कप्तान इनायत खान के बीच लड़ा गया।
पुरंदर का युद्ध, 1665	▪ यह युद्ध मुगल साम्राज्य और मराठा साम्राज्य के बीच लड़ा गया।
सिंहगढ़ का युद्ध, 1670	▪ यह युद्ध महाराष्ट्र के पुणे शहर के पास सिंहगढ़ के किले पर मराठा शासक शिवाजी महाराज के सेनापति तानाजी मालुसरे और जय सिंह प्रथम के अधीन गढ़वाले उदयभान राठौड़, जो मुगल सेना प्रमुख थे, के बीच लड़ा गया।
कल्याण का युद्ध, 1682-83	▪ इस युद्ध में मुगल साम्राज्य के बहादुर खान ने मराठा सेना को हराकर कल्याण पर अधिकार कर लिया।
संगमनेर की युद्ध, 1679	▪ यह युद्ध मुगल साम्राज्य और मराठा साम्राज्य के बीच लड़ा गया। यह आखिरी युद्ध थी जिसमें मराठा राजा शिवाजी लड़े थे।

- राजस्व प्रशासन:
  - शिवाजी ने जागीरदारी प्रणाली को समाप्त कर दिया और इसे रैयतवारी प्रणाली में बदल दिया तथा वंशानुगत राजस्व अधिकारियों की स्थिति में परिवर्तन किया, जिन्हें देशमुख, देशपांडे, पाटिल एवं कुलकर्णी के नाम से जाना जाता था।
  - शिवाजी उन मीरासदारों (Mirasdar) का कड़ाई से पर्यवेक्षण करते थे जिनके पास भूमि पर वंशानुगत अधिकार था।
  - राजस्व प्रणाली मलिक अंबर की काठी प्रणाली (Kathi System) से प्रेरित थी, जिसमें भूमि के प्रत्येक टुकड़े को रॉड अथवा काठी द्वारा मापा जाता था।
  - चौथ और सरदेशमुखी आय के अन्य स्रोत थे।
  - चौथ कुल राजस्व का 1/4 भाग था जिसे गैर-मराठा क्षेत्रों से मराठा आक्रमण से बचने के बदले वसूला जाता था।
  - यह आय का 10 प्रतिशत होता था जो अतिरिक्त कर के रूप में था।

सैन्य प्रशासन:

- शिवाजी ने एक अनुशासित और कुशल सेना का गठन किया। सामान्य सैनिकों को नकद में भुगतान किया जाता था, लेकिन प्रमुख एवं सैन्य कमांडर को जागीर अनुदान (सरंजाम) के माध्यम से भुगतान किया जाता था।

- उनकी सेना में इन्फैंट्री सेना (मावली पैदल सैनिक), घुड़सवार सेना (घुड़सवार और उपकरण संचालक) तथा एक नौसेना शामिल थी।

- मुख्य भूमिकाओं में सेना के प्रभारी सर-ए-नौबत (सेनापति), किलों की देख-रेख करने वाले किलेदार, पैदल सेना इकाइयों का नेतृत्व करने वाले नायक, पाँच नायकों के समूहों का नेतृत्व करने वाले हवलदार तथा पाँच नायकों की देखरेख करने वाले जुमलादार शामिल थे।

मृत्यु:

- शिवाजी का निधन वर्ष 1680 में रायगढ़ में हुआ तथा उनका अंतिम संस्कार रायगढ़ किले में किया गया। उनके साहस, युद्ध रणनीति और प्रशासनिक कौशल की स्मृति एवं सम्मान में प्रत्येक वर्ष 19 फरवरी को शिवाजी महाराज जयंती मनाई जाती है।

महात्मा गांधी की 154वीं जयंती

चर्चा में क्यों ?

स्वतंत्रता संग्राम में उनके अपरिहार्य भूमिका के आलोक में 2 अक्तूबर, 2023 को पूरे देश में महात्मा गांधी की 154वीं जयंती मनाई गई। उनके सिद्धांत और आदर्श वर्तमान समय में अत्यंत प्रासंगिक हैं तथा राष्ट्र को प्रेरित करते हैं।

- स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान के कारण उन्हें "राष्ट्रपिता" की उपाधि प्राप्त हुई, जिसके कारण उनका चित्र भारतीय बैंकनोटों पर चित्रित किया गया।
- बहुआयामी व्यक्तित्व वाले महात्मा गांधी संगीत में गहरी रुचि रखते थे और उन्होंने हमेशा ही पर्यावरण की सुरक्षा को बढ़ावा दिया।

महात्मा गांधी:

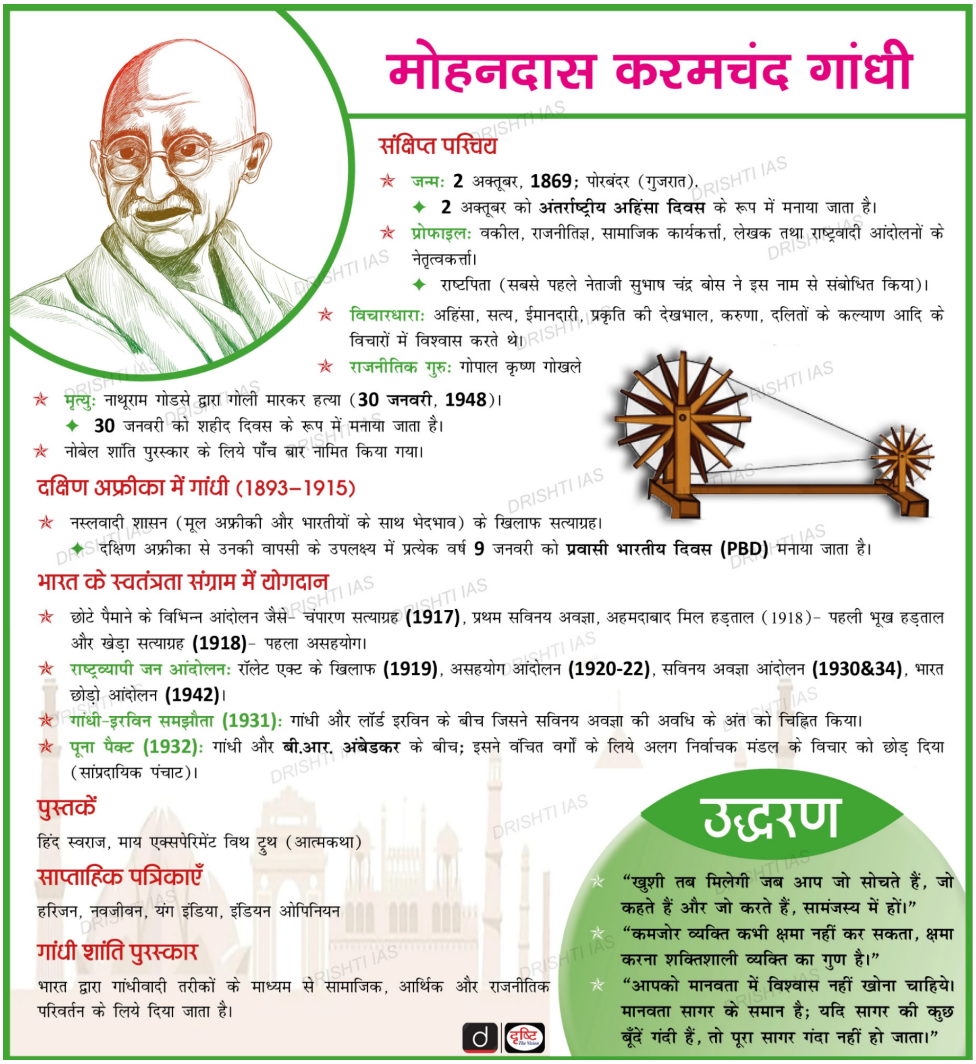

भारतीय मुद्रा और गांधी की तस्वीर:

- **भारतीय मुद्रा पर गांधी की तस्वीर मुद्रित होने की शुरुआत:**
  - बैंक नोटों पर दिखाई देने वाली गांधी की तस्वीर वर्ष 1946 में ली गई उनकी एक तस्वीर का कट-आउट, अर्थात एक भाग है, जिसमें वह ब्रिटिश राजनेता लॉर्ड फ्रेडरिक विलियम पेथिक-लॉरेंस के साथ खड़े हैं।
  - इस तस्वीर के चयन का प्रमुख कारण यह है कि इस तस्वीर में गांधीजी की मुस्कुराहट की अभिव्यक्ति सबसे उपयुक्त थी, साथ ही यह तस्वीर कट-आउट चित्र की दर्पण छवि (मिरर इमेज) है।
  - भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम की धारा 25 के अनुसार, बैंकनोट की रूपरेखा (डिज़ाइन), स्वरूप और सामग्री भारतीय रिज़र्व बैंक के केंद्रीय बोर्ड की अनुसंशा पर विचार करने के उपरांत केंद्र सरकार के अनुमोदन के अनुरूप की जाती है।
- **भारतीय नोटों पर पहली बार गांधीजी की तस्वीर:**
  - गांधीजी की 100वीं जयंती के उपलक्ष्य में वर्ष 1969 में नोटों की एक नई सीरीज़/शृंखला जारी करने के साथ ही पहली बार भारतीय मुद्रा पर गांधी की तस्वीर अंकित की गई थी।
  - फिर अक्तूबर 1987 में गांधीजी की तस्वीर वाले 500 रुपए के नोटों की एक शृंखला शुरू की गई।
- **बैंक नोटों पर गांधी का स्थायित्त्व:**
  - गांधी के चयन का कारण उनका राष्ट्रीय महत्त्व था और वर्ष 1996 में भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा अशोक स्तंभ वाले बैंक नोटों को प्रतिस्थापित करने के लिये एक नई 'महात्मा गांधी शृंखला' शुरू की गई थी।
  - सुरक्षा की दृष्टि से इन नोटों में एक गुप्त छवि, विंडोड सिक्योरिटी थ्रेड तथा दृष्टिबाधित लोगों के लिये इंटैग्लियो सुविधाओं से लैस किया गया था।

पुर्तगाली सिक्का

उत्तरी गोवा के नानोदा बंबर गाँव में एक किसान को ऐसा बर्तन मिला जिसमें बीते युग के सिक्के थे।

- पॉट में 832 तांबे के सिक्के थे, माना जाता है कि इन्हें 16वीं या 17वीं शताब्दी के आसपास गोवा में ढाला गया था, जब यह पुर्तगाली शासन के अधीन था।

भारत में पुर्तगाली सिक्के की विशेषता क्या थी?

- पुर्तगालियों ने गोवा से सोने और चाँदी के सिक्के जारी किये, साथ ही कोचीन, दीव और दमन जैसे अन्य टकसालों से तांबे, टिन और सीसे के सिक्के भी जारी किये।
- सोने के सिक्कों को 'क्रूज़ाडो' या 'मैनोएल' कहा जाता था और ये समान आकार, मूल्य तथा वज़न में जारी किये जाते थे। उनके एक तरफ क्रॉस था एवं दूसरी तरफ शाही हथियार प्रदर्शित किये गए थे।
- चाँदी के सिक्कों को 'मीया-एस्पेरा' और 'एस्पेरा' कहा जाता था।
- तांबे के सिक्कों को विभिन्न मूल्यवर्गों में विभाजित किया गया था जैसे 'बाज़ारुको', 'लील', 'तांगा', 'परदाउ' और 'रियल'।
  - तांबे के सिक्कों पर महल, शेर, मुकुट, क्रॉस और राजा का नाम जैसे विभिन्न प्रतीक थे।
- टिन और सीसे के सिक्के मुख्य रूप से दीव और मलक्का से जारी किये जाते थे और इन्हें 'जिनहेइरो' (Dinheiro) कहा जाता था।
  - उनका डिज़ाइन कच्चा था और वे अक्सर आकार में अनियमित होते थे। उनके एक तरफ राजा का नाम या प्रथमाक्षर और दूसरी तरफ एक क्रॉस या एक फूल था।

गोवा में पुर्तगालियों के साथ भारत का जुड़ाव:

- यात्री के रूप में पुर्तगाली: वास्को डी गामा वर्ष 1498 में मालाबार तट पर कालीकट में समुद्र के रास्ते भारत पहुँचने वाला पहला पुर्तगाली खोजकर्त्ता था और उसका स्वागत एक स्थानीय शासक ज़मोरिन ने किया था।
- उपनिवेशक के रूप में पुर्तगाली: वर्ष 1505 में फ्राँसिस्को डी अल्मीडा पुर्तगाली भारत के पहले वायसराय बने और कोचीन में एक आधार स्थापित किया। उन्होंने कालीकट के ज़मोरिन और मिस्र के मामलुकों के खिलाफ भी लड़ाई लड़ी, जो मसाला व्यापार में प्रतिद्वंद्वी थे।

- अफोंसो डी अल्बुकर्क (1510 में) ने बीजापुर सल्तनत से गोवा पर कब्ज़ा कर लिया और गोवा को भारत के पुर्तगाली राज्य की राजधानी बना दिया।

- पुर्तगालियों का औपनिवेशिक शासन: गोवा में पुर्तगाली शासन वर्ष 1510 से 1961 तक लगभग 450 वर्षों तक चला। इस अवधि के दौरान गोवा एक समृद्ध और महानगरीय शहर बन गया, जिसे "पूर्व का रोम" कहा जाता था।
- गोवा की मुक्ति: पुर्तगाली शासन से गोवा की मुक्ति भारत सरकार द्वारा दिसंबर 1961 में 36 घंटे के सैन्य अभियान के बाद हासिल की गई, जिसे ऑपरेशन विजय के नाम से जाना जाता है।
- गोवा को राज्य का दर्जा: वर्ष 1987 में गोवा को भारत सरकार द्वारा राज्य का दर्जा दिया गया और यह भारत का 25वाँ राज्य बन गया।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद

हाल ही में राष्ट्रपति ने भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की है।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद कौन थे?

- डॉ. राजेंद्र प्रसाद का जन्म 3 दिसंबर, 1884 को बिहार के सिवान ज़िले के जीरादेई में हुआ था।
- वह बिहार में चंपारण सत्याग्रह (1917) के दौरान महात्मा गांधी के साथ जुड़े थे।
- डॉ. प्रसाद ने 1918 के रॉलेट एक्ट और 1919 के जलियाँवाला बाग हत्याकांड पर कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की।
  - डॉ. प्रसाद ने गांधीजी के असहयोग आंदोलन के तहत बिहार में असहयोग का आह्वान किया।
- उन्होंने वर्ष 1930 में बिहार में नमक सत्याग्रह में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसके कारण उन्हें कारावास भी हुआ।
- वह आधिकारिक तौर पर वर्ष 1911 में कलकत्ता में आयोजित अपने वार्षिक सत्र के दौरान भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस में शामिल हो गए।
  - वर्ष 1946 में वे पंडित जवाहरलाल नेहरू की अंतरिम सरकार में खाद्य और कृषि मंत्री के रूप में शामिल हुए तथा "अधिक अन्न उगाओ" का नारा दिया।
- उन्होंने 26 जनवरी, 1950 से (जब देश ने अपना संविधान अपनाया था) 13 मई, 1962 तक भारत के पहले राष्ट्रपति के रूप में कार्य किया और सबसे लंबे समय तक सेवा करने वाले राष्ट्रपति का रिकॉर्ड अपने नाम किया।
- 26 जनवरी, 1950 को वे भारत के प्रथम राष्ट्रपति चुने गए। राष्ट्रपति के रूप में उन्होंने 12 वर्षों से अधिक समय तक सेवा की, जो उन्हें भारत के इतिहास में सर्वाधिक समय तक कार्यरत राष्ट्रपति के रूप में दर्शाता है।
- डॉ. प्रसाद को वर्ष 1962 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया था। उन्होंने कई किताबें लिखीं, जिनमें "सत्याग्रह एट चंपारण," "इंडिया डिवाइडेड" तथा उनकी "आत्मकथा" शामिल हैं।
- 28 फरवरी, 1963 को उनका निधन हो गया।

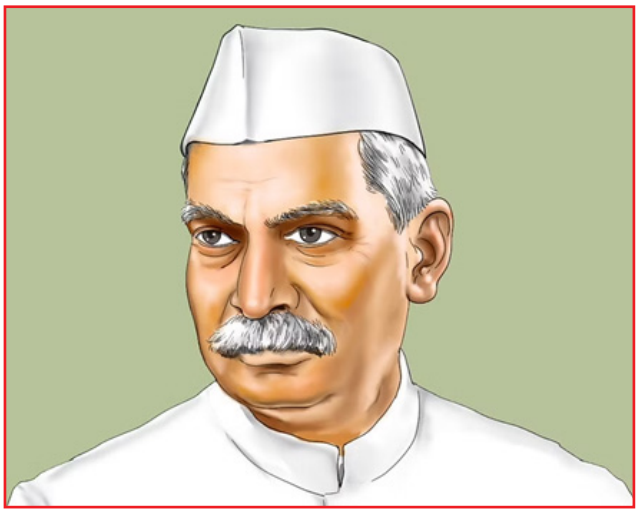

हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन और काकोरी ट्रेन एक्शन

छियानवे वर्ष पूर्व दिसंबर, 1927 में काकोरी ट्रेन एक्शन/षड्यंत्र के 2 वर्ष बाद भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के चार क्रांतिकारियों को फाँसी दी गई थी, जिसमें हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) के सदस्यों ने ब्रिटिश खजाने में धन ले जाने वाली ट्रेन को लूट लिया था।

- यह उनके बलिदान और बहादुरी की मार्मिक याद दिलाता है और भारत के स्वतंत्रता संग्राम को आयाम देने में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिकाओं पर पुनर्विचार करता है।

हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन से संबंधित मुख्य बिंदु क्या हैं?

- **पृष्ठभूमि:** महात्मा गांधी ने वर्ष 1920 में असहयोग आंदोलन की शुरुआत की, अहिंसा पर ज़ोर देते हुए भारतीयों से देश में ब्रिटिश गतिविधियों का समर्थन करना बंद करने का आग्रह किया।
  - हालाँकि वर्ष 1922 में चौरी-चौरा घटना के बाद आंदोलन की दिशा बदल गई, जहाँ पुलिस की गोलीबारी में प्रदर्शनकारियों की मौत हो गई और उसके बाद भीड़ के हमले में पुलिसकर्मियों की मौत हो गई।
  - भारतीय राष्ट्रिय कॉन्ग्रेस के भीतर आंतरिक असंतोष के बावजूद, गांधी ने आंदोलन को अचानक रोक दिया।
- **स्थापना:** असहयोग आंदोलन को रोकने के फैसले से युवाओं के एक समूह का मोहभंग हो गया, जिन्होंने हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) की स्थापना की।

- समूह के संस्थापक राम प्रसाद बिस्मिल और अशफाक-उल्लाह खान, दोनों को कविता का शौक था। अन्य में सचिंद्र नाथ बख्शी और ट्रेड यूनियनिस्ट जोगेश चंद्र चटर्जी शामिल थे।
- चंद्रशेखर आज़ाद और भगत सिंह जैसी हस्तियाँ भी HRA में शामिल हुईं।

➲ **घोषणापत्र:** 1 जनवरी, 1925 को जारी उनके घोषणापत्र का शीर्षक क्रांतिकारी था। इसने क्रांतिकारी पार्टी: एक संगठित, सशस्त्र क्रांति के माध्यम से यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ इंडिया के एक संघीय गणराज्य की स्थापना, के उद्देश्य की घोषणा की।

- क्रांतिकारियों को न तो आतंकवादी और न ही अराजकतावादी के रूप में चित्रित किया गया; उन्होंने आतंकवाद को अपने एक लक्ष्य के रूप में स्वीकार करने से खारिज़ कर दिया, लेकिन आवश्यकता पड़ने पर इसे एक शक्तिशाली प्रतिशोधात्मक उपाय के रूप में स्वीकार किया।

➲ **HRA का दृष्टिकोण:** उन्होंने सार्वभौमिक मताधिकार और समाजवादी सिद्धांतों पर आधारित एक गणतंत्र की कल्पना की, जिसमें मानव शोषण को सक्षम करने वाली प्रणालियों के उन्मूलन को प्राथमिकता दी गई।

➲ **HRA का विकास:** समाजवादी विचारधाराओं की ओर बदलाव के कारण HRA वर्ष 1928 में हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) में तब्दील हो गया, जिसने अपना ध्यान राजनीतिक स्वतंत्रता से हटाकर सामाजिक-आर्थिक समानता पर केंद्रित कर लिया।

- भगत सिंह जैसी हस्तियों के नेतृत्व में, HSRA ने राष्ट्रवादी आकांक्षाओं को समाजवादी सिद्धांतों के साथ मिला दिया, जिससे भारत के स्वतंत्रता संग्राम की दिशा बदल गई।

काकोरी ट्रेन षड्यंत्र क्या था?

➲ अगस्त 1925 में काकोरी में ट्रेन डकैती HRA की पहली बड़ी कार्रवाई थी। 8 नंबर की डाउन ट्रेन शाहजहाँपुर और लखनऊ के बीच चली थी।

➲ जैसे ही ट्रेन काकोरी के पास पहुँची, एक क्रांतिकारी (राजेंद्रनाथ लाहिड़ी) ने ट्रेन को रोकने के लिये आपातकालीन चेन खींच दी और गार्ड को पकड़ लिया। ट्रेन में सरकारी धन से भरे खज़ाने के बैग थे जिन्हें लखनऊ में ब्रिटिश खज़ाने में जमा किया जाना था।

- क्रांतिकारियों ने इस धन को लूटने की योजना बनाई, जिसके बारे में उनका मानना था कि यह वैसे भी वैध रूप से भारतीयों का है।
- उनका उद्देश्य HRA को वित्त पोषित करना और अपने काम तथा मिशन के लिये जनता का ध्यान आकर्षित करना था।

➲ ब्रिटिश अधिकारियों ने कठोर कार्रवाई शुरू की, जिससे कई HRA सदस्यों की गिरफ्तारी हुई।

- गिरफ्तार किये गए चालीस व्यक्तियों में से चार को मौत की सज़ा मिली (17 दिसंबर को राजेंद्रनाथ लाहिड़ी और 19 दिसंबर को अशफाक-उल्लाह खान, राम प्रसाद बिस्मिल, ठाकुर रोशन सिंह) तथा अन्य को लंबे कारावास का सामना करना पड़ा।
- चन्द्रशेखर आज़ाद एकमात्र प्रमुख HRA नेता थे जो गिरफ्त से बचने में कामयाब रहे।

गणतंत्र दिवस 2024

चर्चा में क्यों?

भारत ने 26 जनवरी, 2024 को अपना 75वाँ गणतंत्र दिवस (Republic Day) मनाया। इस दिन भारत के संविधान को अपनाने और देश के किसी भी राष्ट्र के उपनिवेश या प्रभुत्व से मुक्त होकर एक गणतंत्र में परिवर्तित होने का जश्न मनाया जाता है।

गणतंत्र दिवस 2024 की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

➲ **फ्राँसीसी दल (French Contingent):**

- गणतंत्र दिवस परेड में फ्राँस के सैन्य दल ने हिस्सा लिया। यह दल कॉर्प्स ऑफ फ्रेंच फॉरेन लीजन का था।
  - फ्रेंच फॉरेन लीजन एक विशिष्ट सैन्य दल है जिसमें फ्राँसीसी सेना में सेवा की इच्छा रखने वाले विदेशी भी शामिल हो सकते हैं।
- यह दूसरी बार था जब फ्राँसीसी सशस्त्र बलों ने भारत के गणतंत्र दिवस समारोह में भाग लिया।
  - वर्ष 2016 में, फ्राँसीसी सैन्य दल भारत के गणतंत्र दिवस परेड में भाग लेने वाला पहला विदेशी सैन्य दल बना।

➲ **संस्कृति मंत्रालय की झाँकी:**

- 'भारत: लोकतंत्र की जननी' (Bharat: Mother of Democracy) विषय पर बनी संस्कृति मंत्रालय की झाँकी ने गणतंत्र दिवस समारोह परेड 2024 में पहला पुरस्कार हासिल किया।
  - इसमें एनामॉर्फिक तकनीक का उपयोग करके प्राचीन भारत से आधुनिक काल तक लोकतंत्र के विकास को प्रदर्शित किया गया।

➲ **नारी शक्ति:**

- कर्तव्य पथ पर 75वें गणतंत्र दिवस परेड में महिला-केंद्रित विकास पर ज़ोर देते हुए 'विकसित भारत' और 'भारत-लोकतंत्र की मातृका' विषयवस्तु को प्रदर्शित किया गया।
- गणतंत्र दिवस परेड में नारी शक्ति या महिला सशक्तीकरण पर विशेष फोकस के साथ भारत की सैन्य शक्ति और सांस्कृतिक विविधता का प्रदर्शन किया गया।

- परेड में पहली बार तीनो सेनाओं में पूर्ण रूप से महिलाओं की भागीदारी वाली टुकड़ी की भागीदारी देखी गई।

एनसीसी दल:

- राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC) निदेशालय महाराष्ट्र के दल ने लगातार तीसरी बार गणतंत्र दिवस शिविर-2024 कार्यक्रम में प्रतिष्ठित प्रधानमंत्री का बैनर (Prime Minister's Banner) जीतने में सफलता प्राप्त की।
  - प्रधानमंत्री का बैनर गणतंत्र दिवस शिविर में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले NCC राज्य दल को दिया जाने वाला एक प्रतिष्ठित पुरस्कार है। उल्लेखनीय है कि गणतंत्र दिवस शिविर एक वार्षिक कार्यक्रम है जहाँ पूरे भारत के NCC कैडेट अपने कौशल और प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं।

प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार:

- प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार बहादुरी, कला और संस्कृति, खेल, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, नवाचार व सामाजिक सेवा के क्षेत्र में असाधारण क्षमताओं तथा उत्कृष्ट उपलब्धि वाले बच्चों को प्रदान किया जाता है।

वीर गाथा 3.0:

- सशस्त्र बलों के वीरतापूर्ण कार्यों एवं बलिदानों के बारे में बच्चों को प्रेरित करने तथा जागरूकता फैलाने के लिये गणतंत्र दिवस समारोह 2024 के एक भाग के रूप में प्रोजेक्ट वीर गाथा का तीसरा संस्करण आयोजित किया गया था।

अनंत सूत्र:

- 75वें गणतंत्र दिवस परेड में देश की बुनाई और कढ़ाई कला के साथ-साथ भारत की महिलाओं के प्रति सम्मान के रूप में "अनंत सूत्र - द एंडलेस थ्रेड" नामक एक अनूठी इंस्टालेशन प्रदर्शित की गई, जिसमें पूरे भारत से साड़ियों और पर्दों का प्रदर्शन किया गया।

बीटिंग रिट्रीट समारोह 2024:

- 29 जनवरी, 2024 को दिल्ली के विजय चौक पर बीटिंग रिट्रीट समारोह का आयोजन किया गया। यह समारोह एक सैन्य परंपरा है जो गणतंत्र दिवस समारोह के समापन का प्रतीक है।
- समारोह में भारतीय सेना, नौसेना, वायु सेना और केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल (CAPF) के संगीत बैंड ने 31 भारतीय धुनों को बजाते हुए प्रदर्शन किया।

गणतंत्र दिवस का इतिहास क्या है ?

परिचय:

- गणतंत्र दिवस 26 जनवरी 1950 को भारत के संविधान को अपनाने और देश के गणतंत्र में परिवर्तन की याद दिलाता है जो 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ।
  - भारत का संविधान 26 नवंबर 1949 को संविधान सभा द्वारा अंगीकृत किया गया एवं 26 जनवरी 1950 को क्रियान्वित हुआ। 26 नवंबर को संविधान दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- भारत के संविधान ने 26 जनवरी 1950 को प्रभावी होने पर भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 और भारत सरकार अधिनियम 1935 को निरस्त कर दिया। भारत ब्रिटिश क्राउन का प्रभुत्व समाप्त हो गया और एक संविधान के साथ एक संप्रभु, लोकतांत्रिक गणराज्य बन गया।

इतिहास:

- 1920 के दशक का संदर्भ में :
  - फरवरी 1922 में चौरी-चौरा घटना के बाद असहयोग आंदोलन पूर्ण रूप से समाप्त हो गया।
- 1920 के दशक में असहयोग आंदोलन और रौलट-विरोधी सत्याग्रह के पैमाने पर लामबंदी नहीं देखी गई।
  - हालाँकि, 1920 का दशक भगत सिंह और चंद्रशेखर आज़ाद जैसे क्रांतिकारियों के उदय तथा जवाहरलाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस, वल्लभभाई पटेल एवं सी. राजगोपालाचारी जैसे नए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) नेताओं के उद्भव के लिये महत्त्वपूर्ण था।
  - वर्ष 1927 में, अंग्रेज़ों ने भारत में राजनीतिक सुधारों पर विचार-विमर्श करने के लिये साइमन कमीशन नियुक्त किया, जिससे व्यापक आक्रोश फैल गया और "साइमन गो बैक" के नारे के साथ विरोध प्रदर्शन हुआ।
  - बदले में, कॉन्ग्रेस ने मोतीलाल नेहरू के अधीन अपना स्वयं का आयोग नियुक्त किया। नेहरू रिपोर्ट में माँग की गई कि भारत को डोमिनियन स्टेटस दिया जाए।
- वर्ष 1926 की बाल्फोर घोषणा में, डोमेनियन को "ब्रिटिश साम्राज्य के अंतर्गत स्वायत्त समुदायों के रूप में परिभाषित किया गया था, जो किसी भी तरह से अपने घरेलू क्षेत्र के किसी भी पहलू में एक दूसरे के अधीन नहीं थे या बाहरी मामले, हालाँकि क्राउन के प्रति एक आम निष्ठा से एकजुट हैं और ब्रिटिश राष्ट्रमंडल राष्ट्रों के सदस्यों के रूप में स्वतंत्र रूप से जुड़े हुए हैं।"
- डोमिनियन या गणतंत्र:
  - नेहरू रिपोर्ट को कॉन्ग्रेस के भीतर सार्वभौमिक समर्थन नहीं मिला क्योंकि बोस और जवाहरलाल नेहरू जैसे नेताओं ने डोमिनियन स्टेटस के बजाय ब्रिटिश साम्राज्य से पूर्ण स्वतंत्रता की वकालत की थी।
  - उन्होंने तर्क दिया कि डोमिनियन स्टेटस स्व-शासन या स्वराज के लक्ष्य के विरुद्ध था।

- वर्ष 1906 में कलकत्ता में दादाभाई नौरोजी की अध्यक्षता में कॉन्ग्रेस (INC) सत्र में, अपना लक्ष्य "स्वशासन या स्वराज" घोषित किया।
- वायसराय इरविन की घोषणा:
  - वर्ष 1929 में, वायसराय इरविन ने घोषणा की कि भविष्य में भारत को "डोमेनियन स्टेटस" का दर्जा दिया जाएगा, जिसे इरविन घोषणा या दीपावली (Deepawali) घोषणा के रूप में जाना जाता है।
- हालाँकि डोमिनियन स्टेटस को लागू करने के लिये कोई समय सीमा नहीं थी।
- इसके परिणामस्वरूप कॉन्ग्रेस की ओर से अधिक कट्टरपंथी लक्ष्यों की माँग की गई, जिसमें पूर्ण स्वतंत्र गणराज्य की माँग भी शामिल थी।
- पूर्ण स्वराज की घोषणा:
  - दिसंबर 1929 में कॉन्ग्रेस के लाहौर अधिवेशन में ऐतिहासिक "पूर्ण स्वराज" प्रस्ताव पारित किया, जिसमें पूर्ण स्व-शासन/संप्रभुता और ब्रिटिश शासन से पूर्ण स्वतंत्रता का नारा दिया गया।
- स्वतंत्रता की घोषणा आधिकारिक तौर पर 26 जनवरी 1930 को घोषित की गई थी और कॉन्ग्रेस ने भारतीयों से उस दिन "स्वतंत्रता" का जश्न मनाने का आग्रह किया था।
- स्वतंत्रता के बाद के भारत में गणतंत्र दिवस:
  - वर्ष 1930 से 1947 तक 26 जनवरी को "स्वतंत्रता दिवस" या "पूर्ण स्वराज दिवस" के रूप में मनाया जाता था।
  - 15 अगस्त 1947 को भारत को आज़ादी मिली, जिससे गणतंत्र दिवस के महत्त्व का पुनर्मूल्यांकन हुआ।
  - भारत के नए संविधान की घोषणा के लिये 26 जनवरी का चयन इसके मौजूदा राष्ट्रवादी महत्त्व और "पूर्ण स्वराज" घोषणा के अनुरूप था।

नोट:

- प्रत्येक वर्ष गणतंत्र दिवस पर भारत के राष्ट्रपति, जो राष्ट्र का प्रमुख होता है, द्वारा तिरंगा 'फहराया' जाता है जबकि स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) पर प्रधानमंत्री, जो केंद्र सरकार का प्रमुख होता है, द्वारा 'ध्वजारोहण' किया जाता है।
  - हालाँकि ये दोनों शब्द अमूमन एक दूसरे के स्थान पर उपयोग किये जाते हैं किंतु ये तिरंगे को प्रस्तुत करने की विभिन्न तरीकों को संदर्भित करते हैं।
  - 26 जनवरी को ध्वज को मोड़कर अथवा घुमाकर एक स्तंभ के शीर्ष पर लगा दिया जाता है। इसके बाद राष्ट्रपति द्वारा इसका अनावरण ('फहराना') किया जाता है जिसमें ध्वज को ऊपर की ओर खींचने के आवश्यकता नहीं होती।
    - ध्वज को 'फहराना' संविधान में निर्धारित सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्धता को नवीनीकृत करने का एक प्रतीकात्मक संकेत है जो भारत के ब्रिटिश उपनिवेश से एक संप्रभु, लोकतांत्रिक गणराज्य बनने की ओर परिवर्तन को उजागर करता है।
  - जबकि 15 अगस्त पर स्तंभ के नीचे स्थित ध्वज को प्रधानमंत्री द्वारा नीचे से ऊपर की ओर खींचा ('रोहण') जाता है।
    - ध्वजारोहण एक नए राष्ट्र के उदय, देशभक्ति तथा औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता का प्रतीक है।

पराक्रम दिवस 2024

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारत के प्रधानमंत्री (Prime Minister- PM) ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती मनाने के लिये लाल किले में आयोजित पराक्रम दिवस (23 जनवरी 2024) समारोह में भाग लिया।

- प्रधानमंत्री ने भारत पर्व (पर्यटन मंत्रालय द्वारा आयोजित) का भी शुभारंभ किया जो भारत की समृद्ध विविधता को प्रदर्शित करने तथा विभिन्न संस्कृतियों को प्रदर्शित करने के लिये आयोजित नौ दिवसीय कार्यक्रम है।
- पराक्रम दिवस के अवसर पर केंद्र ने आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में व्यक्तियों तथा संगठनों द्वारा दिये गए अमूल्य योगदान का सम्मान करने के लिये सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार-2024 की घोषणा की।

पराक्रम दिवस क्या है?

- भारत में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती के उपलक्ष्य में वर्ष 2021 से प्रत्येक वर्ष पराक्रम दिवस मनाया जाता है।
- "पराक्रम" शब्द का हिंदी अनुवाद साहस अथवा वीरता होता है जो नेताजी तथा भारत की स्वतंत्रता के लिये लड़ने वालों की प्रबल व साहसी भावना को दर्शाता है।
- समारोह में अमूमन स्वतंत्रता संग्राम में नेताजी की भूमिका के ऐतिहासिक महत्त्व को उजागर करने वाले विभिन्न कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ शामिल होती हैं।
- इस बड़े उत्सव का आयोजन संस्कृति मंत्रालय की ओर से भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, साहित्य अकादमी और भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार जैसे अपने सहयोगी संस्थानों की सहभागिता में किया गया।
- इस उत्सव के एक हिस्से के तहत इस कार्यक्रम ने गतिविधियों की एक समृद्ध श्रृंखला की मेज़बानी की जो नेताजी सुभाष चंद्र बोस तथा आज़ाद हिंद फौज की समृद्ध विरासत को प्रदर्शित करती हैं।

- वर्ष 2022 में नेताजी की 125वीं जयंती को चिह्नित करते हुए इंडिया गेट के समीप नेताजी की प्रतिमा स्थापित की गई जहाँ वर्ष 1968 तक किंग जॉर्ज पंचम की प्रतिमा थी।
- 8 सितंबर, 2022 को नई दिल्ली में इंडिया गेट के पास एक बड़ी मूर्ति अंतत: नेताजी की होलोग्राफिक छवि की जगह ले लेगी।

सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार क्या है?

क्षेत्र मान्यता:

- भारत सरकार ने आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में व्यक्तियों और संस्थानों द्वारा किये गए उत्कृष्ट कार्यों को मान्यता देने के लिये सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार की स्थापना की।

प्रशासित:

- राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA की स्थापना आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005 के तहत गृह मंत्रालय के तहत की गई थी)।
- पुरस्कार:

- इस पुरस्कार की घोषणा प्रतिवर्ष 23 जनवरी को नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर की जाती है।
- प्रमाण-पत्र के अलावा, इन पुरस्कारों में एक संस्थान के लिये 51 लाख रुपए और एक व्यक्ति के लिये 5 लाख रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाता है।
- संस्थान नकद पुरस्कार का उपयोग केवल आपदा प्रबंधन से संबंधित परियोजनाओं के लिये कर सकता है।

योग्यता:

- इस पुरस्कार के लिये केवल भारतीय नागरिक और भारतीय संस्थान ही आवेदन कर सकते हैं।
- भारत में रोकथाम, शमन, त्वरित बचाव, प्रतिक्रिया, राहत, पुनर्वास, अनुसंधान, नवाचार या पूर्व चेतावनी सहित आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में कोई भी अनुभव प्राप्त नामांकित व्यक्ति या संगठन इसके लिये पात्र है।

SCBAPP- 2024: 60 पैराशूट फील्ड हॉस्पिटल, उत्तर प्रदेश को आपदा प्रबंधन में उत्कृष्ट कार्य के लिये, विशेष रूप से राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं एवं संकटों के दौरान चिकित्सा सहायता प्रदान करने के लिये सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार- 2024 के लिये चुना गया है।

- उत्तराखंड बाढ़ (2013), नेपाल भूकंप (2015) और तुर्की तथा सीरिया भूकंप (2023) जैसी घटनाओं के दौरान अस्पताल के काम को इसकी असाधारण सेवा के उदाहरण के रूप में उजागर किया गया है।

रानी चेन्नम्मा

चर्चा में क्यों?

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी कंपनी के विरुद्ध रानी चेन्नम्मा के विद्रोह के 200 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में, भारत में कई सामाजिक समूहों द्वारा 21 फरवरी को एक राष्ट्रीय अभियान, नानू रानी चेन्नम्मा (मैं भी रानी चेन्नम्मा हूँ) का आयोजन किया गया।

यह अभियान चेन्नम्मा की स्मृति को याद करके यह दिखाने का प्रयास कर रहा है कि महिलाएँ सम्मान और न्याय की रक्षा में अग्रणी हो सकती हैं। रानी चेन्नम्मा की वीरता देश की महिलाओं के लिये प्रेरणा है।

अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिये उनकी कठोर और त्वरित सोच को उनके राज्य की रक्षा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता तथा समर्पण के प्रमाण के रूप में देखा जा सकता है।

रानी चेन्नम्मा कौन थी?

परिचय:

- चेन्नम्मा का जन्म 23 अक्टूबर 1778 को कर्नाटक के वर्तमान बेलगावी ज़िले के एक छोटे से गाँव कागती में हुआ था।
- 15 वर्ष की उम्र में उन्होंने कित्तूर के राजा मल्लसर्जा से शादी की, जिन्होंने वर्ष 1816 तक प्रांत पर शासन किया।
- वर्ष 1816 में मल्लसर्जा की मृत्यु के बाद, उनका सबसे बड़ा पुत्र शिवलिंगरुद्र सरजा सिंहासन पर बैठा। लेकिन ज़्यादा समय नहीं बीता जब शिवलिंगरुद्र का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा।
- जीवित रखने के लिये कित्तूर को एक अनुमानित उत्तराधिकारी की आवश्यकता थी। फिर भी, चेन्नम्मा ने भी अपना बेटा खो दिया था और साथ ही शिवलिंगरुद्र के पास कोई स्वाभाविक उत्तराधिकारी भी नहीं था।
- वर्ष 1824 में अपनी मृत्यु से पहले, शिवलिंगरुद्र ने उत्तराधिकारी के रूप में एक बच्चे, शिवलिंगप्पा को गोद लिया था। हालाँकि ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने 'व्यपगत के सिद्धांत' के तहत शिवलिंगप्पा को राज्य के उत्तराधिकारी के रूप में मान्यता देने से इनकार कर दिया।
  - उक्त सिद्धांत के तहत, नैसर्गिक उत्तराधिकारी न होने की दशा में संबद्ध रियासत का पतन हो जाएगा और कंपनी द्वारा उस पर कब्ज़ा कर लिया जाएगा।
- धारवाड़ के ब्रिटिश अधिकारी जॉन थैकेरी ने अक्तूबर 1824 में कित्तूर पर हमला किया।

अंग्रेज़ों के विरुद्ध युद्ध:

- कर्नाटक की पूर्व रियासत पर आक्रमण करने के उद्देश्य से वर्ष 1824 में, 20,000 ब्रिटिश सैनिकों का एक बेड़ा कित्तूर किले की तलहटी में तैनात हुआ।
- परंतु रानी चेन्नम्मा ने उनक सामना किया और अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिये एक ब्रिटिश अधिकारी को मार डाला।
- मार्शल आर्ट और सैन्य रणनीति में प्रशिक्षित, वह एक दुर्जेय नेता थीं।
- उन्होंने ब्रिटिश सेना का सामना करने के लिये गुरिल्ला युद्ध रणनीति अपनाकर युद्ध में अपनी सेना का नेतृत्व किया।

- यह संघर्ष कई दिनों तक जारी रहा किंतु अंततः अपने बेहतर हथियारों के परिणामस्वरूप अंग्रेज़ विजयी हुए।

विरासत:

- बैलहोंगल किले (बेलगावी, कर्नाटक) में रानी चेन्नम्मा को कैद कर लिया गया किंतु उनकी हौसला अटूट रहा।
- उनके विद्रोह ने अनगिनत लोगों को ब्रिटिश शासन के विरुद्ध युद्ध करने के लिये प्रेरित किया। वह साहस और अवज्ञा का प्रतीक बन गईं।
- वर्ष 2007 में भारत सरकार ने उनके नाम पर एक डाक टिकट जारी कर उन्हें सम्मानित किया।
- रानी चेन्नम्मा को एक रक्षक और संरक्षक के रूप में प्रदर्शित करते हुए कई कन्नड़ लावणी अथवा लोक गीत गाए जाते हैं।
  - लावणी एक जीवंत और अभिव्यंजक लोक कला है जिसकी जड़ें महाराष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत में निहित हैं, लेकिन इसे कर्नाटक के कुछ हिस्सों में भी जगह मिली है। "लावणी" शब्द मराठी शब्द "लावण्या" से लिया गया है, जिसका अर्थ है सुंदरता।
  - लावणी पारंपरिक गीत और नृत्य का एक संयोजन है, जो एक ताल वाद्य यंत्र ढोलकी की लयबद्ध ताल पर प्रस्तुत किया जाता है।

व्यपगत का सिद्धांत क्या है?

- यह एक विलय नीति थी जिसका पालन लॉर्ड डलहौज़ी ने व्यापक रूप से किया था जब वह वर्ष 1848 से 1856 तक भारत का गवर्नर-जनरल था।
- इसके अनुसार, कोई भी रियासत जो ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष नियंत्रण में थी, जहाँ शासक के पास कोई कानूनी पुरुष उत्तराधिकारी नहीं था, उसे कंपनी द्वारा कब्ज़ा कर लिया जाएगा।
  - इसके अनुसार, भारतीय शासक के किसी भी दत्तक पुत्र को राज्य का उत्तराधिकारी घोषित नहीं किया जा सकता था।

व्यपगत के सिद्धांत को लागू करके, डलहौज़ी ने निम्नलिखित राज्यों पर कब्ज़ा कर लिया:

- सतारा (1848 ई.), जैतपुर, और संबलपुर (1849 ई.), बघाट (1850 ई.), उदयपुर (1852 ई.), झाँसी (1853 ई.) तथा नागपुर (1854 ई.)।

साबरमती आश्रम पुनर्विकास परियोजना

हाल ही में दांडी मार्च की 94वीं वर्षगाँठ पर भारत के प्रधानमंत्री ने अहमदाबाद में साबरमती आश्रम पुनर्विकास परियोजना का शिलान्यास किया।

- साबरमती आश्रम पुनर्विकास परियोजना महात्मा गांधी द्वारा स्थापित मूल साबरमती आश्रम को पुनर्स्थापित, संरक्षित और पुनर्निर्माण करने के लिये 1,200 करोड़ रुपए के परिव्यय की पहल है।

साबरमती आश्रम का ऐतिहासिक महत्त्व क्या है?

स्थापना:

- वर्ष 1917 में महात्मा गांधी द्वारा स्थापित, साबरमती आश्रम अहमदाबाद में जूना वडज गाँव के समीप साबरमती नदी के पश्चिमी तट पर स्थित है।
  - गांधी ने अपने जीवनकाल में पाँच बस्तियों की स्थापना की जिनमें से दो दक्षिण अफ्रीका में (नेटाल में फीनिक्स सेटलमेंट और जोहान्सबर्ग के समीप टॉल्स्टॉय फार्म) तथा तीन भारत में स्थित हैं।
  - भारत में गांधी का पहला आश्रम वर्ष 1915 में अहमदाबाद के कोचरब क्षेत्र में स्थापित किया गया था तथा अन्य साबरमती आश्रम (अहमदाबाद) और सेवाग्राम आश्रम (वर्धा में स्थित) हैं।
- वर्तमान में इसका प्रबंधन साबरमती आश्रम संरक्षण और स्मारक ट्रस्ट (SAPMT) द्वारा किया जाता है।

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका:

- आश्रम ने गांधी की सामाजिक-राजनीतिक गतिविधियों और सत्य के साथ मेरे प्रयोग किताब के लेखन के लिये आधार के रूप में कार्य किया।
  - यह दांडी मार्च 1930 सहित कई मौलिक आंदोलनों की शुरुआत का साक्षी बना।
- दांडी मार्च के अलावा गांधीजी ने चंपारण सत्याग्रह (1917), अहमदाबाद मिलों की हड़ताल और खेड़ा सत्याग्रह (1918), खादी आंदोलन (1918), रोलेट एक्ट तथा खिलाफत आंदोलन (1919), एवं असहयोग आंदोलन (1920) साबरमती में रहते हुए चलाया।
- विनोबा भावे साबरमती आश्रम में "विनोबा कुटीर" नामक कुटिया में रहते थे।

वास्तुकला और दार्शनिक महत्त्व:

- गांधीजी ने सादगी, आत्मनिर्भरता और सामुदायिक जीवन को मूर्त रूप देते हुए आश्रम को स्वयं डिज़ाइन किया था।

विरासत और प्रतीकवाद:

- साबरमती आश्रम गांधी की स्थायी विरासत और भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका को दर्शाता है।

दांडी मार्च क्या है?

उत्पत्ति:

- यह गांधीवादी दर्शन के प्रशंसकों के लिये एक तीर्थ स्थल बना हुआ है, जो उनके जीवन, शिक्षाओं और सिद्धांतों के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

- भारत में नमक बनाने की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है, जो मुख्य रूप से किसानों द्वारा की जाती थी, जिन्हें अक्सर नमक किसान कहा जाता था।
  - समय के साथ, नमक एक व्यावसायिक वस्तु बन गया और अंग्रेज़ों ने नमक पर कर लगा दिया, जिससे यह औपनिवेशिक शोषण का प्रतीक बन गया।
- महात्मा गांधी ने नमक कर को एक विशेष रूप से दमनकारी उपाय के रूप में पहचाना और इसे ब्रिटिश शासन के खिलाफ अहिंसक विरोध में जनता को संगठित करने के अवसर के रूप में देखा।
- 2 मार्च 1930 को, महात्मा गांधी ने भारत के वायसराय लॉर्ड इरविन को एक पत्र लिखा, जिसमें उन्हें सविनय अवज्ञा के रूप में नमक कानून तोड़ने के अपने इरादे की जानकारी दी।
- दांडी मार्च, जिसे नमक सत्याग्रह या नमक मार्च के नाम से भी जाना जाता है, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से आज़ादी के लिये देश की लड़ाई में एक महत्त्वपूर्ण क्षण था।

दांडी मार्च:

- दांडी मार्च 12 मार्च 1930 को अहमदाबाद के साबरमती आश्रम से शुरू हुआ, जिसका नेतृत्त्व महात्मा गांधी ने किया था।
  - 24 दिवसीय यात्रा चार ज़िलों तक फैली और 48 गाँवों से होकर गुज़री।
- 6 अप्रैल, 1930 को गांधीजी ने दांडी के तट से एक मुट्ठी नमक उठाकर प्रतीकात्मक रूप से नमक कानून तोड़ा और ब्रिटिश नमक एकाधिकार के खिलाफ सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया।
  - गांधीजी ने नमक कानूनों को सामूहिक रूप से तोड़ने की शुरुआत करने के लिये 6 अप्रैल को एक प्रतीकात्मक कारण से चुना,यह राष्ट्रीय सप्ताह का पहला दिन था जो वर्ष 1919 में शुरू हुआ था,जब गांधीजी ने रोलेट एक्ट के खिलाफ राष्ट्रीय हड़ताल की योजना बनाई थी।

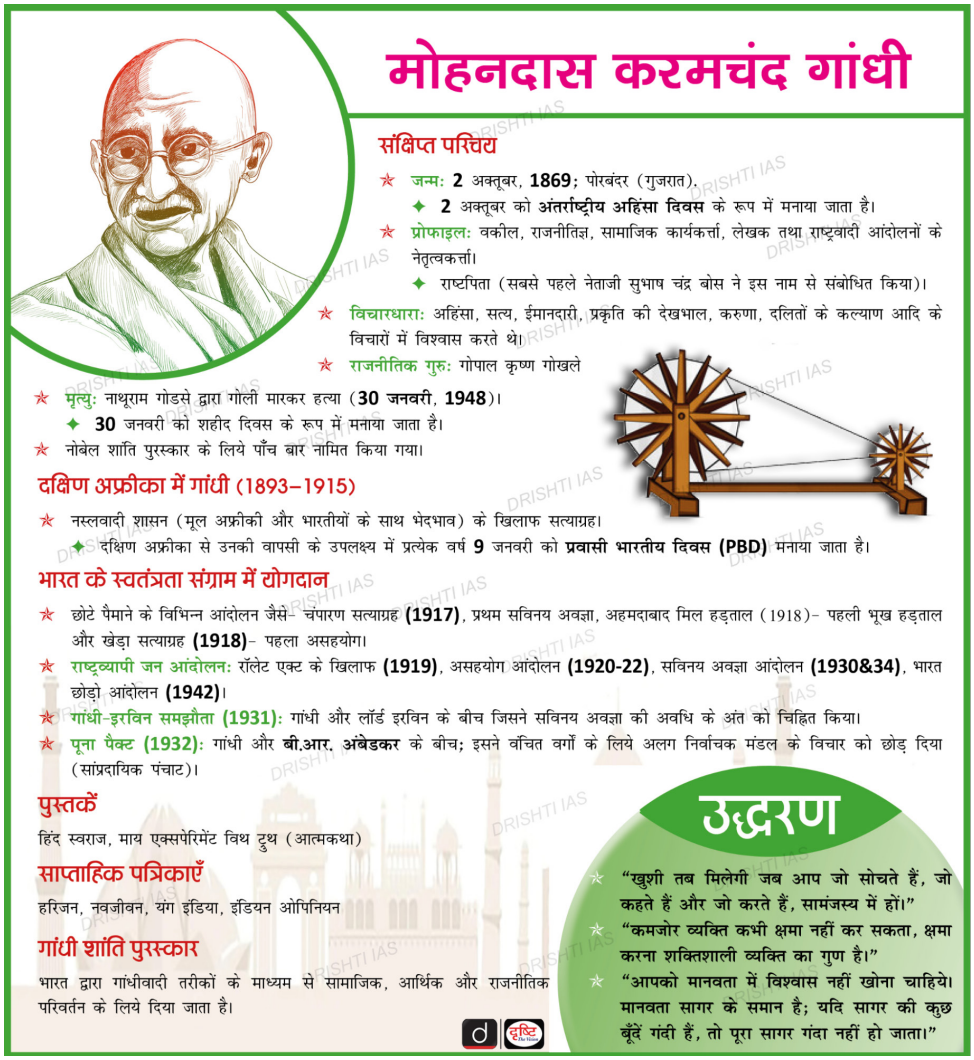

विश्व की प्रमुख सभ्यताएँ

मेसोपोटामिया, 4000-3500 ईसा पूर्व

- इसका उद्गम आधुनिक इराक और **ईरान, सीरिया, कुवैत** और **तुर्की** के कुछ भाग, **टाइग्रिस** और **यूफ्रेट्स नदियों** के बीच हुआ
- इसे **सभ्यता के उद्गम** स्थल के रूप में जाना जाता है
- अपनी लिपि, देवताओं और महिलाओं पर विचारों वाली संस्कृतियों का विविध संग्रह
- समृद्ध सांस्कृतिक और धार्मिक परिदृश्य को दर्शाते हुए, धर्म, कानून, चिकित्सा और ज्योतिष जैसे विषयों पर ध्यान केंद्रित करने वाली **अत्यधिक सम्मानित शिक्षा प्रणाली**
- **पुरुष तथा महिला दोनों विविध व्यवसायों में शामिल** थे, जिनमें कृषि के साथ-साथ मुंशी, चिकित्सक, कारीगर, बुनकर, कुम्हार आदि जैसी भूमिकाएँ भी शामिल थीं।
- महिलाओं को समान अधिकार प्राप्त थे और वे जमीन की मालिक भी हो सकती थीं, तलाक के लिये याचिका लगा सकती थीं, आदि
- **मीनारें,** सीढ़ीदार पिरामिड मंदिरों के **आसपास बसे हुए शहर** के निवासी अपने संरक्षक देवता का सम्मान करते थे
- **धूप में सुखाई गई ईंटों** से निर्मित शहर, विश्व के पहले शहर थे।

प्राचीन मिस्र, 3100 ईसा पूर्व

- **नील नदी** के तट पर स्थित
- **पिरामिडों, कब्रों और मकबरों** के लिये सबसे अधिक जाना जाता है, जिसमें शवों को मृत्यु के पश्चात् के जीवन हेतु तैयार करने के लिये ममीकरण किया जाता है।
- इसने स्मारकीय लेखन और गणित प्रणालियों की विरासत छोड़ी
- सभ्यता **332 ईसा पूर्व में** सिकंदर महान की विजय के साथ **समाप्त** हो गई

सिंधु घाटी सभ्यता, 3300 ईसा पूर्व

- यह आधुनिक **भारत, अफगानिस्तान और पाकिस्तान** में स्थित है
- अन्य प्राचीन सभ्यताओं की तुलना में अपेक्षाकृत शांतिपूर्ण, व्यापक युद्ध के बहुत कम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं
- **संगठित शहर की योजना, एकसमान पकी-ईंट वाले घरों,** एक ग्रिड संरचना और जल निकासी, सीवेज और जल आपूर्ति प्रणालियों से परिपूर्ण
- **1800 ईसा पूर्व के आसपास इसका पतन** हुआ, मृत्यु के पीछे के वास्तविक कारणों पर अभी भी परिचर्चाएँ होती हैं (ये सिद्धांत पतन के लिये आर्य आक्रमण या जलवायु एवं प्राकृतिक कारकों को प्रस्तावित करते हैं)

प्राचीन चीन, 2000 ईसा पूर्व

- हिमालय पर्वत, प्रशांत महासागर और गोबी रेगिस्तान द्वारा संरक्षित, **यलो और यांग्त्ज़ी नदियों के बीच स्थित**
- सदियों तक आक्रमणकारियों और अन्य विदेशियों से संघर्ष में फला-फूला
- सामान्यतः चार राजवंशों में विभाजित - **ज़िया, शांग, झोउ और किन** - प्राचीन चीन पर एक के बाद एक सम्राटों का शासन था।
- **दशमलव प्रणाली, अबेकस और धूपघड़ी** के साथ-साथ **प्रिंटिंग प्रेस** को विकसित करने का श्रेय दिया जाता है
- बड़े पैमाने पर बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं के निर्माण के लिये आबादी को संगठित किया (मिस्रवासियों के समान)

Drishti IAS